विषय-सूची ।

निवेदन ।

जीवनचरित्र साहित्य की बड़ी ही महत्त्व-पूर्ण तथा सर्व जनोपयोगी शाखा है। जीवनचरित्रों के अध्ययन से छोटे-बड़े, स्त्री पुरुष सब ही अपना मनोरञ्जन कर सकते हैं तथा साथ ही साथ शिक्षा भी ग्रहण कर सकते हैं। यद्यपि हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी में भारतवर्ष के कतिपय महा पुरुषों के छोटे मोटे जीवन चरित्र हैं, किन्तु अन्य देशीय महापुरुषों के जीवन-चरित्र का एकप्रकार से अभावही सा है। डारविन स्पैन्सर लाक, बर्कले निटशे कार्नेगी, टामस अल्वा एडिसन तथा बर्नेक प्रभृति आधुनिक काल के युग परिवर्तनकारी महापुरुषों के साधारण कोटि के जीवन-चरित्रों का भी न होना बहुत ही खटकता है। हिन्दी के विद्वान् लेखकों का ध्यान इस अभाव की ओर आकर्षित करने के विचार से ही लेखक ने इस छोटी सी पुस्तक के लिखने का साहस किया है।

आधुनिक काल के महापुरुषों में कार्नेगी का जीवन-चरित्र सब से अधिक शिक्षाप्रद है। कार्नेगी के जीवन के अध्ययन से बहुतसी ऐसी शिक्षायें मिलती हैं जिन की हमारे देश के युवकों को बड़ी आवश्यकता है। उदाहरणतः कार्नेगी का जीवन बनाता है कि —

(१) उद्योगी मनुष्य के लिये कुछ भी असम्भव नहीं है।

(२) ज़ुबानी जमाख़र्च छोड़ कर कर्मशीलता का पाठ सीखना चाहिये।

(३) हाथ के काम (Manual Labour) से घृणा नहीं करनी चाहिये।

(४) धन का सदुपयोग किस प्रकार किया जासकता है ?

(५) मनुष्य का उद्देश्य अपने भाइयों की सहायता करना होना चाहिये ।

क्या ही अच्छा हो यदि हमारे देशवासी भी इस महापुरुष के जीवन-चरित्र से शिक्षा ग्रहण करके मेहनत मज़दूरी के कामो को घृणा की दृष्टि से देखना छोड दे तथा अपने प्यारे देश को धन-धान्य-सम्पन्न करने के प्रयत्न मे लगजायें । केवल अपनी कुलीनता का ही घमण्ड न करते रहे और अपने पूर्वजनों के गुण-गान से ही सन्तुष्ट न रहे ।

लेखक देवनागरी हाई स्कूल के हेड मास्टर श्रीयुत गगादत्त पाडे बी० ए०, एल० टी० का बहुत कृतज्ञ है जिन्होंने इस पुस्तक के लिये सारगर्भित तथा विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखने की कृपा की है ।

यह पुस्तक हिन्दी के उत्साही प्रेमी चौधरी शिवनाथ सिह जी शाण्डिल्य के प्रोत्साहन से लिखी गई है । अत चौधरी साहब का भी लेखक बहुत ही कृतज्ञ है ।

१—२—११

विनीत—
उमरावसिह कारुणिक बी० ए०,
सम्पादक—' ललिता '

भूमिका

महापुरुषों की जीवनियों का सब ही देशों और भाषाओं में स्वागत होता है। हिन्दी में तो अभी इनका इतना अभाव है कि यदि यत्न भी किया जाय तो भी बहुत समय में यह कमी पूरी हो सकती है। ऐसी अवस्था में कार्नेगी के इस जीवन-चरित्र को पाठकों के सन्मुख उपस्थित करने में बहुत लम्बी भूमिका की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

कार्नेगी उन इने गिने पुरुषों में से था जो अपने जीवन में संसार के सन्मुख किसी बात का एक ज्वलन्त उदाहरण रख जाते हैं। यों तो बहुत लोग धनवान होते हैं और कोई २ अपने जीवन में स्वयं ही बहुत सा धन कमा लेते हैं पर बहुत ही कम लोग ऐसे होते हैं जो एक मजदूर की अवस्था से अपने परिश्रम से संसार के सब से बड़े धन-पतियों में गिने जाने लगते हैं, और फिर आधुनिक संसार में दान का ऐसा उदाहरण सामने रख देते हैं कि मनुष्य दंग रह जाय। धन कमाना कठिन है पर धन का सदुपयोग और भी कठिन है। कार्नेगी के जीवन से हमें दोनों बातों की अच्छी शिक्षा मिलती है। हमारे देश में इस बात की आवश्यकता है कि लोग जानें कि पाताल में किस प्रकार एक अशिक्षित जुलाहे के लड़के ने धन मान और यश प्राप्त किया तथा कहां तक हम उनका अनुकरण कर सकते हैं और "भाग्यं फलति सर्वत्र" को छोड़ कर

"उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी" का मत्र जप सकते है। इसमे सन्देह नहीं कि कार्नेगी की सफलता का बहुत सा अंश उसके देश तथा वहा की स्थिति पर निर्भर है यह शंका हो सकती है कि आधुनिक भारत मे भी कार्नेगी उतनी सफलता प्राप्त कर सकता था जितनी उसने अमेरिका मे की जहां पर एक मज़दूर अपनी योग्यता के कारण ही सारे देश का प्रेसीडैन्ट हो सकता है। पर यही तो देखना है कि मनुष्य कहा तक अपनी स्थिति का दास है और कहा तक अपने भाग्य का कर्त्ता है। किसी ने कहा है कि महापुरुष किसी एक जाति या देश की सम्पत्ति नही वरन् ससार की सम्पत्ति है। उनका उदाहरण समार के लिए उपयोगी होता है। देश और जाति की विभिन्नता होते हुवे भी उनसे हम उपदेश ले सकते है। दूसरों को देखकर भी तो मनुष्य उन्नति कर सकता है और पूर्णतया नहीं तो कुछ अंश मे उनका अनुकरण कर लाभ उठा सकता है।

दूसरी बात जो कार्नेगी के जीवन मे बड़े महत्त्व की है वह उसका धन का सदुपयोग है। धन जीवन का लक्ष्य नहीं है। अमेरिका जैसी धन पूजने वाली भूमि मे जब कतिपय महापुरुष केवल मुख से ही नहीं कहते कि धन छोडकर मरना पाप है वरन् बहुत अंश मे अपने जीवन से यह चरितार्थ भी कर देते हैं तो भारत जैसे धर्मप्रधान देश मे यदि धन जीवन का साधन न रहकर लक्ष्य होजाय तो बड़े ही दुर्भाग्य की बात है। पर

भारत में जो धन को साधन मानते हैं वे उसका सदुपयोग नहीं जानते। इसी कारण हमारे देश में दान की प्रथा बहुत ही बिगड़ी हुई है। आलसी और निरुद्यमी लोगों का पालन-पोषण, व्यर्थ तथा अनावश्यक धर्मशालाएं कुंवे, मन्दिर आदि वहां पर भी बनवाना जहां पर उनकी संख्या काफ़ी हो और फिर उनकी देखभाल का कुछ भी प्रबन्ध न करना आदि देश की दान-प्रथा के कुछ उदाहरण हैं। कार्नेगी के दान के कार्यों और दान सम्बन्धी विचारों से हमारे देशवासी बहुत ही लाभ उठा सकते हैं। व्यर्थ दान जिस से सर्व साधारण का वह लाभ न हो जिसके लिये वह किया जाता है मूर्खता का चिन्ह है और वह दान जिससे देश में आलसी और निरुद्यमी लोगों की संख्या बढ़े धर्म नहीं प्रत्युत् पाप का साधन है।

इन सब विचारों को सन्मुख रखते हुये मैं सहर्ष इस पुस्तक का हिन्दी संसार में स्वागत करता हूं। बाबू उमराव सिंह जी ने इस पुस्तक को लिखकर हिन्दी साहित्य और समाज की एक सेवा की है और मुझे आशा है कि उनकी इस पुस्तक का यथायोग्य सत्कार होगा।

मेरठ, १४—२—२२। गङ्गादत्त पांडे बी० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर देवनागरी हाई स्कूल,

एन्ड्रू कार्नेगी।

जन्म-२५ नवम्बर सन् १८३७ ई० मृत्यु-११ अगस्त सन् १९१९ ई०

कार्नेगी

पहिला प्रकरण

बाल्य-काल।

Childhood shows the Man
As morning shows the Day.

—Milton.

Sweet are the uses of adversity,
Which, like the toad, ugly and venomous,
Wears yet a precious jewel in his head

—Shakespeare.

टलैण्ड में डम्फ़र्मलाइन नामक एक नगर है। स्काटलैण्ड के इतिहास में यह नगर बहुत प्रसिद्ध है। प्रथम चार्ल्स यहीं पर पैदा हुवा था। स्काटलैण्ड का प्रसिद्ध देशभक्त राबर्ट ब्रूस इसी स्थान पर सदैव के लिये सो रहा है। हमारे चरितनायक एन्ड्रू कार्नेगी ने यहीं पर १५ नवंबर

सन् १८३७ ई० को जन्म लिया था। सात वर्ष का होनेपर कार्नेगी के पिता ने उसको एक स्थानीय पाठशाला मे पढ़ने के लिये बैठा दिया। कार्नेगी के पिता और चाचा प्रजातंत्रवादी थे। वे इस विषय की वक्तृताये दिया करते थे कि राजनैतिक विषयों मे सर्वसाधारण की सम्मति ली जानी चाहिये। पार्लियामैन्ट का चुनाव प्रतिवर्ष होना चाहिये। कार्नेगी बाल्यावस्था मे अपने पिता और चाचा की बातें बड़े ध्यानसे सुना करता था। जब कार्नेगी सातवर्ष का हुवा, उसका चाचा राजद्रोह के अभियोग मे पकड़ लिया गया। इस घटना का कार्नेगी के हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा। राजाओं के विरोध का अंकुर उसके हृदय मे पूरे तौर से जम गया। स्वलिखित जीवन-चरित्र मे कार्नेगी ने इस घटना का उल्लेख करते हुवे लिखा है कि-"आज तक जब मैं किसी राजा या परम्परा से चले आते हुवे अधिकार का वर्णन करता हूं तो मेरे खून मे जोश पैदा हो जाता है और चेहरा लाल होजाता है। कभी२ मै यहभी सोचता हूं कि यदि सब मौरूसी बादशाहो को एक २ करके मारभी डाला जाय तो भी कुछ अनुचित न होगा। मुझे मौरूसी अधिकार से बड़ी घृणा है। सात वर्ष की आयु ही से मेरा ऐसा विचार है।

यद्यपि बाल्यकाल मे कार्नेगी पर उसके चचा का बहुत कुछ प्रभाव पड़ा था, किन्तु उसकी माता का प्रभाव भी कुछ कम न पड़ा था। आठ वर्ष की अवस्था तक उसको उसकी माता ही ने शिक्षा दी थी। उसकी माता बड़ी ही दृढ़विचार, दयालु तथा सुशीला थी। कार्नेगी की भविष्य कृतकार्यता का बहुत कुछ श्रेय उस की माता को है।

कार्नेगी का बाप जुलाहे का काम करता था। उन दिनों इङ्गलैण्ड मे भी हाथ से कपड़ा बुना जाता था। सौदागर लोग रुई और सूत जुलाहो को देकर अपनी रुचि के अनुसार कपड़ा बुनवा

लेते थे और फिर बाज़ार में बेच डालते थे। कार्नेगी के पिता का काम अच्छा चलता था। कई शिष्य भी काम करते थे। सन् १८१४ ई० में स्टीफन्सन के स्टीम एन्जिन के आविष्कार ने एक नया ही युग उपस्थित कर दिया। कपड़े मैशीनों से बुने जाने लगे। करघे मैशीनों का मुकाबला नहीं करसके क्योंकि मैशीनों का कपड़ा अधिक सुन्दर, मजबूत तथा सस्ता होता था। कुछ दिनों तक तो कार्नेगी के पिता ने ज्यों त्यों करके गुज़ारा किया, किन्तु जब काम आना बिल्कुल ही बन्द होगया तो बिचारा बड़ी मुश्किल में पड़ा। किसी दूसरे शहरमें जाना भी व्यर्थ ही मालूम पड़ा क्योंकि जुलाहों पर सबही जगह मुसीबत के बादल टूट रहे थे। अन्त में बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद यही निश्चय किया कि अमरीका के पिट्सबर्ग नामक स्थानको चलना चाहिये। स्काटलैण्ड से अमरीका तक उन दिनों समुद्रयात्रा इतनी सुगम न थी जितनी आजकल है। किन्तु सब प्रकार की विघ्नबाधाओं की कुछ भी परवाह न करते हुवे तथा अनेक प्रकार का कष्ट सहते हुवे कार्नेगी के पिता अपनी पत्नी तथा कार्नेगी और उसके छोटे भाई टामथ्रोमस सहित ग्लासगो से 'विस्कासैट' नामक जहाज़पर सवार होकर सात सप्ताह में पिट्सबर्ग पहुंच गये। वहां आकर कार्नेगी के पिता ने एक रुई के कारखाने में नौकरी करली।

चौदह वर्ष का होने पर कार्नेगी भी उसी कारखाने में पांच शिलिंग प्रति सप्ताह पर नौकर हो गया। कार्नेगी का काम बायलर के नीचे आग देकर स्टीम एञ्जिन चलाना था। प्रातः काल से लेकर सायंकाल तक केवल ४० मिनट का अवकाश भोजन पाने के लिये मिलता था। चौदह वर्ष के लड़के के लिये यह काम बड़ा कठिन था। किन्तु कार्नेगी इस काम के मिलने से बड़ा प्रसन्न हुवा, क्यों कि उस का विचार था कि मनुष्य का सब से बड़ा धर्म (duty) अपनी रोटी आप कमाना है। कार्नेगी ने एक स्थान पर

लिखा है कि मेरा पहिला एक डालर और बीस सैन्ट मेरे सारे धन से मूल्यवान है, क्यों कि ईमान्दारी के साथ२ हाथसे मज़दूरी करने का सब से पहिला यही पुरस्कार था।

इस कठिन काम से कार्नेगी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, किन्तु कार्नेगी इस से बिल्कुल नही घबराया। वह घरवालोंसे यही कहता रहा कि बहुत ही आसान काम है। उस का विचार था कि यदि घरवालों से कार्य की कठिनता का बर्णन करूंगा तो वे इस काम को छुड़वादेंगे और इस प्रकार परिवार पालने का काम उन के लिये और भी कठिन हो जायगा। कार्नेगी को अपनी भविष्य कृतकार्यता पर पूरा विश्वास रहता था।

फ़ारसीमे एक कहावत है कि 'हिम्मते मर्दा' मददे खुदा' अर्थात् ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करतेहैं। थोड़े ही दिनो बाद कार्नेगी को तार बांटने का काम मिल गया। उन दिनो अम्रीका मे जे० डम्स रीड (J Dumgs Reid) ने तार के काम मे अच्छी उन्नति कर रक्खी थी। रीड का भी असली वतन डम्फ़र्मलाइन ही था, किन्तु रीड साहब वहां से बचपन ही मे अम्रीका चले आये थे। जब इन्होंने यह सुना कि कार्नेगी भी डम्फर्मलाइन हीका रहनेवाला है तो बहुत प्रसन्न हुवे और तत्काल कार्नेगी को तारबांटने के काम पर नौकर रख लिया। यहां पर कार्नेगी को १२ शिलिङ्ग प्रति सप्ताह मिलने लगे।

यह नौकरी पाकर कार्नेगी ने अपने आप को एक नये संसार में अनुभव किया। पहिली नौकरी में सारे दिन एञ्जिन के धुंवेसे भरे हुवे कमरे मे बन्द रहना पड़ता था। इस नये काम मे अपने आपको खुले मैदान मे पाकर कार्नेगी का चित्त बडा प्रसन्न हुवा। स्वयं कार्नेगी का कहना है कि यह नौकरी पाकर मुझको ऐसा

प्रतीत हुआ कि जैसे मैं अन्धकार से निकल कर प्रकाश में या नर्क से निकल कर स्वर्ग में आगया हूं । तार के चपरासी के लिये शहर के मौहल्लों, बड़े२ आदमियों तथा दुकानदारों के पते जानना अत्यन्तावश्यक है । कार्नेगी को इस बात का बिल्कुल ज्ञान न था कि शहर में कौनर मौहल्ले कहां२ पर हैं तथा कौनसा बड़ा दुकान्दार किस बाजार मे रहता है । इस कारण आरम्भ में बड़ी कठिनाई पड़ी । किन्तु कार्नेगी की प्रकृति के मनुष्य के लिये इस कठिनाई को दूर करना कोई बड़ा काम न था ।

कार्नेगी ने बाज़ार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर काटने आरम्भ कर दिये । चक्कर काटने समय कार्नेगी प्रत्येक दुकान्दार के साइनबोर्ड पर दृष्टि रखता था । इस प्रकार थोड़े ही काल मे कार्नेगी ने बाज़ार का चित्र अपने हृत्पटल पर इस प्रकार खेंच लिया कि उस को सारे दुकान्दारों के नाम, उसी क्रम से जिस क्रमसे बाज़ार में उनकी दुकाने थीं, कण्ठ होगये ।

उन दिनों तार के चपरासी को एक काम और भी करना पड़ता था । यदि कोई तार खराब होजाता था तो तार के चपरासी ही को वह तार बल्लियों के ऊपर चढ़कर मरम्मत के लिये उतारना पड़ता था । एकतो कार्नेगी का शरीर दुर्बल था और दूसरे व्यायाम का अभ्यास नहीं था, इस कारण यह काम कार्नेगी से भली भांति न हो सका ।

बहुधा तार के चपरासी तारबाबुओं के आने से पहिले लैन मे एक दूसरे से तार में बातचीत कर के तार भेजने तथा ग्रहण करने का अभ्यास किया करते थे । कार्नेगी ने भी इस अवसर से लाभ उठाया । कार्नेगी का चित्त इस काम मे खूब लगता था । उस के कान आवाज़ को खूब पहिचानते थे । इसकारण कार्नेगी ने थोड़े ही समय में इस काम में अच्छा अभ्यास कर लिया ।

एक दिन प्रातः काल के समय कार्नेगी तार के काम का अभ्यास कर रहाथा। इतने ही मे फ़ोल्वैड से एक मृत्यु-समाचार का तार आया। मृत्यु के तार उन दिनो बड़े आवश्यक समझे जाते थे। उनके एक२ शब्द पर ध्यान दिया जाता था। कार्नेगी ने इस समाचार को लेकर ठीक भाषा में लिख कर तार बाबू की मेजपर रख दिया। तार बाबू ने जब आकर समाचार को ठीक२ लिखा पाया तो बडा आश्चर्यान्वित हुआ। उस दिन से सब को कार्नेगी की योग्यता का परिचय हो गया।

कुछ दिनो बाद कार्नेगी को तार बाबू का काम मिलगया। इस पद का वेतन आठ पौण्ड वार्षिक था। इस पद तथा वेतन वृद्धि से कार्नेगी को बडी प्रसन्नता हुई। कार्नेगी को इस समय वेतन वृद्धि की आवश्यकता भी थी, क्यो कि अब उसके पिता का स्वर्गवास होगया था और इस कारण गृहस्थ का सारा बोझ उसी पर आपड़ा था। अब पहिले वेतन से काम नहीं चलता था।

थोड़े ही दिनो मे कार्नेगी से सब बड़े२ दुकानदार तथा बहुत से अफसर, जिनका तार घर से काम पडता था, परिचित होगये। जो कार्नेगी को देखता था, उसके साहस की प्रशंसा करता था। तार घर में पैन्सिलवेनिया रेलरोड (Pensilvania Rail Road) के पिट्सबर्ग डिविज़न के सुपरिन्टैन्डेन्ट ए० स्काट (A scott) भी अक्सर आया करते थे। कार्नेगी के काम से प्रसन्न होकर उन्होंने कार्नेगी से दो पौण्ड प्रति मास की उन्नति पर रेलवे कम्पनी मे तार के काम पर आने के लिये कहा। रेलवे कम्पनी मे उन्नति का अधिक अवसर देखकर कार्नेगी रेलवे कम्पनी मे चला आया।

टामस साहब कार्नेगी के काम से बड़े प्रसन्न रहते थे। वह जान गये कि अवसर मिलने पर कार्नेगी अच्छी उन्नति कर सकता है। एक दिन टामस साहब ने कार्नेगी से कहा कि एक्स-

प्रेस कम्पनी के स्वामी की मृत्यु के कारण कम्पनी के दस हिस्से विकाऊ हैं । प्रत्येक हिस्से की कीमत ६० डालर है । इस प्रकार दस हिस्से ६०० डालर के होते हैं । यदि तुम ५०० डालर किसी प्रकार एकत्रित करसको तो मैं १०० डालर तुमको तुम्हारे वेतन में पेशगी देदूंगा । इस प्रकार तुम दस हिस्से ले सकते हो । मेरी समझ में यह बहुत अच्छा अवसर है ।

कार्नेगी की तबियत पहिले ही से तिजारत की ओर झुकती थी । इस अवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुवा । किन्तु बड़ी कठिनाई यह आपड़ी कि रुपया कहां से आवे ? अस्तु । कार्नेगी ने घर पर जाकर इस बात का ज़िक्र किया । मा ने कहा-"निराश होने की कोई बात नहीं है, जिस प्रकार भी हो सकेगा रुपये का प्रबन्ध किया ही जायगा" । बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद यही निश्चित हुवा कि मकान गिरवी रख देना चाहिये । इस प्रकार कार्नेगी ने एक्सप्रेस कम्पनी के दस हिस्से ले लिये । यहीं से कार्नेगी के अभ्युत्थान का युग आरम्भ होता है ।

कुछ ही दिनों बाद कार्नेगी को अपनी योग्यता दिखाने का एक और अवसर मिला । एक दिन ऐसा हुवा कि मिस्टर स्काट को दफतर आने में देर हो गई । उनकी अनुपस्थिति में रेल्वे लाइन पर कुछ दुर्घटना होगई और मिस्टर स्काट की आवश्यकता पड़ी । कार्नेगी ने अपनी बुद्धिमता से सारा काम स्वयं ही निपटा दिया । स्काट साहब ने जब आकर सब वृत्तान्त सुना तो बड़े प्रसन्न हुवे और कार्नेगी को अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बना लिया ।

सन् १८६१ मे अम्रीका में सिविल वार (Civil war) छिड़गई । कार्नेगी की आयु इस समय २४ वर्ष की हो गई थी । मिस्टर स्काट को इस युद्ध में युद्ध के सहायक मन्त्री का काम मिला । कार्नेगी ने स्काट साहब को बड़ी सहायता दी । कार्नेगी का काम फ़ौज तथा रसद

के आने जाने की देख रेख करने का था। इस के अतिरिक्त तारों पर भी कडी दृष्टि रखनी पड़ती थी जिससे विद्रोही उनको तोड़ न डाले। यद्यपि कार्नेगी शान्तिप्रिय था और उस को मार धाड़ के कामो से कोई दिलचस्पी नही थी, किन्तु अपना धर्म समझ कर अपना काम खूब जी जान से करता रहा। कार्नेगी सैनिको मे नही था, किन्तु फिर भी लड़ाई के जख़्मियों की सूची मे उस का नाम तीसरे नवर पर था। बात यह हुई कि जमीन मे लगा हुवा एक बिजली का तार अचानक ढीला होजाने से उछल पड़ा और उस के मुंहपर आकर लगा। इससे उसके गालपर गहरा ज़ख्म होगया।

युद्ध से लौटने के पश्चात् एक दिन कार्नेगी रेल मे बैठा हुवा कही को जा रहा था। मार्ग मे एक अजनबी ने उसको नमस्कार करके पूछा कि "क्या आप का संवन्ध पैन्सिलवेनिया रेल रोड कम्पनी से है?" कार्नेगी ने कहा "हां"। इस पर उस अजनबी ने अपनी बग़ल मे से एक कागज़ निकाल कर कार्नेगी को दिखाया यह ऐसी गाड़ी का नक्शा था जिस मे अच्छी तरह सोया जा सकता था। कार्नेगी नक्शा देखतेही इस आविष्कार के महत्व को समझ गया। कार्नेगी ने सोचा कि दूर की यात्रा मे अवश्य यह गाड़ियां लोगों को पसन्द आयेंगी। कार्नेगी ने इस आविष्कार की बड़ी प्रशसा की और बोला कि मै अवश्य तुम्हारे इस नमूने का ज़िक्र स्काट साहव से करूंगा। स्काट साहव को भी नमूना पसन्द आया और तजुरवा करने के लिये पहिले इस प्रकार की दो गाड़ियां बनवाई गईं। इस तजुरबे में अच्छी कृतकार्यता हुई और निश्चित हुआ कि स्लीपिंगकार (सोने की गाड़ी) बनाई जायें। कार्नेगी भी इस काम में हिस्सेदार हुवा। कार्नेगी ने २०० डालर के हिस्से लिये। अब फिर रुपये की चिन्ता हुई किन्तु अब सब लोग कार्नेगी की कार्यकुशलता से परिचित होगये थे। इस कारण रुपया मिलने मे किसी प्रकार की कठिनाई नही हुई।

कार्नेगी के बंक ने रुपयों का सवाल सुनतेही कार्नेगी को आवश्यक धन दे दिया । कार्नेगी को धन के मिल जाने से तो प्रसन्नता हुई ही । किन्तु इससे भी अधिक प्रसन्नता यह बात जान कर हुई कि अब लोग मुझ में विश्वास करने लगे हैं । कार्नेगी ने इस घटना के सम्बन्ध में एक स्थान पर लिखा है । "मनुष्य के लिये वह गर्व का दिन होता है जिस दिन वह रुक्के पर उधार लिये हुवे उधार को पूरी तौर से चुका देता है । किन्तु वह दिन इससे भी अधिक गर्व का होता है जब पहिली बार बंकवाला किसी मनुष्य का विश्वास करके उसको रुपया उधार देदेता है" ।

दूसरा प्रकरण।

स्वतन्त्र कार्नेगी।

—N. P. Willis

'स्लीपिंग कार कम्पनी' को जैसा कि कार्नेगी का विचार था अच्छा लाभ रहा। अब कार्नेगी की आय बढ़ गई, किन्तु आय बढ़ जाने के कारण कार्नेगी ने व्यर्थ का व्यय नहीं बढ़ाया। आवश्यक कामों से जो कुछ बचता था, उसे जोड़ता रहता था। थोड़े ही समय में यथेष्ट धन एकत्रित होगया। सबसे पहिले तो उसने अपना सब ऋण चुकाया। बचे हुवे धन को वह किसी लाभकारी काम में लगाने का विचार करने लगा।

कार्नेगी ने सोचा कि भविष्य में मट्टी के तेल के काम मे अच्छी उन्नति होने की संभावना है। कुछ मित्रों को सम्मिलित करके 'स्टोरी फ़ार्म' नामक एक प्रसिद्ध तेल की खान ८ सहस्र पौण्ड में मोल लेली। कार्नेगी का विचार हुवा कि आज कल खानों से जितना तेल निकल रहा है, भविष्य में इतना न निकाला जासकेगा। इससे तेल बचाना चाहिये जिससे भविष्य में दुगने चौगने मूल्य पर बेचा जासके। इस काम के लिये कार्नेगी ने एक बड़ा हौज बनवाया। इस हौजमें एक लाख पीपे या ३३ लाख गैलन तेल आसकता था। इसको ऊपर तक भर दिया गया। कोई दो लाख के पौण्ड का तेल इस में था। किन्तु यह हौज चूना था। चूने से भी बहुत कुछ हानि होने की संभावना थी.इस कारण इस हौज़ के तेल को न बेच कर भविष्य के लिये रक्षित रखने का विचार छोड़ दिया। संरक्षित रखने से कुछ विशेष लाभ भी नहीं होता, क्योंकि कार्नेगी की यह कल्पना कि भविष्य में तेल का मूल्य बहुत बढ़ जायगा, ठीक नहीं निकली। फिर भी कम्पनी को बहुत लाभ रहा। पहिले ही साल में कम्पनी ने दो लाख पौण्ड लाभ में बांटे। आठ सहस्र पौण्ड की पूंजी पर दो लाख पौण्ड का लाभ आश्चर्यजनक ही है। यदि कार्नेगी तेल के काम में रहता तो भी करोड़पति हो जाता। किन्तु कार्नेगी का ध्यान और ही तरफ़ चला गया। तेल का काम कार्नेगी ने अपने मित्र राकफ़ेलर के लिये छोड़ दिया।

उन दिनों पुल लकड़ी के बना करते थे। लकड़ी के पुलों के टूट जाने तथा जल जाने की बड़ी आशंका रहती थी। बहुत दिनों से कार्नेगी के मस्तिष्क में यह विचार चक्कर मार रहा था कि पुल लोहे के बनाये जायें। इस विषय पर स्वयं अच्छी तरह विचार करके कार्नेगी ने इस काम के लिये एक और नई कम्पनी स्थापित की। इस कम्पनी का नाम स्टोनब्रिज कम्पनी था।

सब से पहिला उल्लेखनीय काम इस कम्पनी ने यह किया कि ओहियो नदी का लोहे का पुल तैयार किया। इस नदी का फाट ३०० फ़िट है। कार्नेगी का अनुमान ठीक निकला। लकड़ी का स्थान अब लोहे ने ले लिया, और कार्नेगी की कम्पनी की दिन दूनी रात चौगनी उन्नति होने लगी। जब कार्नेगी ने देखा कि अब काम खूब चल निकला है तो पैन्सिलवेनिया रेल रोड कम्पनीकी नौकरी छोड़ दी। उस कम्पनी मे कार्नेगी आरम्भ मे तारबाबू के काम पर नौकर हुवा था और धीरे २ डिविज़न सुपरिन्टेन्डेन्ट होगया। अब कार्नेगी ने अपना सारा ध्यान कम्पनी के काम मे लगा दिया।

अब लोहेका पुल बनाने की और भी बहुत सी कम्पनियें खुल गई थी, किन्तु कार्नेगी की कम्पनी सब से बढ़ी चढ़ी थी। इस उन्नति का मुख्य कारण यह था कि कार्नेगी की कम्पनी नूतन आविष्कारो के प्रयोग मे अप-टु-डेट (up-to-date) थी।

कार्नेगी फ़ौलाद नरेश (Steel King) के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह उपाधि कार्नेगी को एक नूतन आविष्कार के सदुपयोग से ही प्राप्त हुई थी। सन् १८६८ ई० मे कार्नेगी लन्दन गया था। वहां उस का ध्यान बीसमर साहब द्वारा आविष्कृत फ़ौलाद तैयार करने की नई विधि की ओर गया। कार्नेगी तत्काल ही इस आविष्कार की महत्ता को समझ गया, क्योंकि कार्नेगी का विचार था कि शीघ्र ही रेलकी पटड़ियो मे लोहे का स्थान फ़ौलाद लेलेगा। अन्य बहुत से चतुर इन्जीनियर भी इस बात को अनुभव करने लगे थे। स्वयं कार्नेगी ने पैन्सिलवेनिया रेलरोड कम्पनी मे कार्बन द्वारा लोहे को कड़ा करने की विधि सोची थी। पैन्सिलवेनिया कम्पनी ने इस विधि का तजुरबा करने मे ४ हज़ार पौण्ड व्यय भी किये थे और परिणाम बहुत सन्तोषप्रद निकला था। किन्तु कार्नेगी को यह

नूतन विधि और भी अच्छी प्रतीत हुई। वह तत्काल इस आविष्कार-सम्बन्धी आवश्यक बातें जान कर अमरीका में इस आविष्कार को प्रयोग मे लाने के लिये चला आया। उन्नति का रहस्य यही है कि किसी उपयोगी तथा लाभकारी काम का उस ही समय करना आरम्भ कर दिया जाय जब दूसरे मनुष्य उस काम को आरम्भ करने का विचार ही कर रहे हों, कार्नेगी की उन्नति का भी यही रहस्य था। जिस प्रकार कार्नेगी ने सब से पहिले लकडी के मुकाबले में लोहे की उत्तमता को समझा था, उसी प्रकार कार्नेगी ही ने लोहे के मुक़ाबिले में फौलाद की उत्तमता को भी सब से पहिले समझा। इन्हीं दो बातों ने कार्नेगी को जुलाहे से करोड़-पति बना दिया।

यह कार्नेगी सदृश उद्योगी पुरुषों के उद्योग ही का परिणाम है कि आज अमरीका लोहे के काम मे इङ्गलैण्ड को नीचा दिखा रहा है। नही तो आरम्भ में किसी को इस बात की कल्पना तक नही हो सकती थी कि एक दिन अमरीका इङ्गलैण्ड का प्रतिद्वन्द्वी हो जायगा। स्वय कार्नेगी ने इस विषय में सन् १८६३ ई० में लिखा था- "समुद्र में प्रवेश करने से अमरीका अपनी क्षुद्रता प्रमाणित करेगा। समुद्र का स्वामी इङ्गलैण्ड है। क्लाइड नदी पर यहां की अपेक्षा आधे मूल्य में जहाज़ बनते हैं। फ़ौलाद भी वहा अमरीका की अपेक्षा आधी लागत में तैयार होता है। अमरीका की दूरदर्शिता यही है कि थल से आगे पग न बढ़ावे। आधुनिक विभाग बहुत ही उचित है। अमरीका के लिये थल है तथा इङ्गलैण्ड के लिये जल।

जिस प्रकार कार्नेगी का लोहे के पुलों की उपयोगिता का अनुमान ठीक निकाला था, उसी प्रकार फ़ौलाद की उपयोगिता का अनुमान भी ठीक निकला, रेल की लाइनों में सब जगह फ़ौलाद ही का प्रयोग होने लगा। इतनी मांग आने लगी कि कार्नेगी की

कम्पनी सव मांगो को पूरा न कर सकी। इस कृतकार्यता से कार्नेगी का साहस और वढ़ा। अव उस का विचार हुवा कि मै संसार का सारा फौलादी व्यापार अपने ही हाथ में लेलूं। उसका विचार था कि अमरीका को अभी इस क्षेत्र में उन्नति करने का बहुत अवसर है।

इस काम के लिये उसने वड़ी२ लोहे और कोयले की कानों को लेना आरम्भ किया। पिट्सवर्ग के चारों ओर के अपने कारखानो को मिलाने के लिये खास अपनी रेल वनवाली। झीलो के पार कच्ची धात सुगमता से पहुचाने के लिये स्टीमरों का एक वेडा भी मोल लेलिया। एडगर टामस विल्डिंग नाम की एक बहुत वड़ी इमारत वनवा डाली।

अपने काम को खूव वढ़ा चढ़ा कर कार्नेगी का ध्यान इस काम को करनेवाली दूसरी कम्पनियों को हड़प करने की ओर गया। सव से पहिले होमस्टेड कम्पनी से पत्र-व्यवहार कर के उस को अपनी कम्पनी में मिला लिया। अव कार्नेगी का काम दिन दूनी रात चौगनी उन्नति करने लगा। सन् १८८० ई० में कार्नेगी के पास सात वडे२ लोहे और फौलाद के कारखाने हो गये। कोयले तथा लोहे की कान और रेल तथा जहाज़ी वेड़े इस से पृथक् थे। इस समय कार्नेगी की पूंजी पांच करोड़ पौण्ड अर्थात् ७५ करोड़ रुपये के लगभग थी।

तीसरा प्रकरण ।

फ़ौलाद-नरेश के कारख़ाने ।

—Gowan.
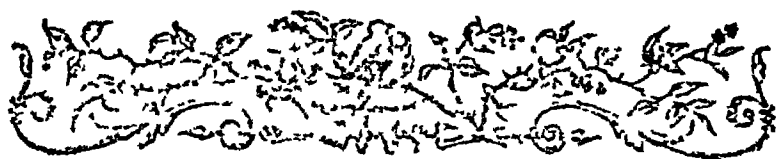
र्नेगी की आकांक्षा थी कि मैं स्वयं इकला ही सारे संसार के फ़ौलाद के व्यापार का ठेकेदार बनजाऊं । इसलिये उसने कई कम्पनियें मोल लेकर सन् १९०० ई० में ३॥ करोड की पूंजी से 'कार्नेगी स्टील कम्पनी' स्थापित की। इस कम्पनी के आधीन 'होमस्टेड' 'एडगर टामस', तथा 'डिक्सी' नामक तीन बडे बडे कारख़ाने तथा इन कारखानों से सम्बन्ध रखनेवाले और छोटे २ कारख़ाने थे। उन कारख़ानों में ४० सहस्र मनुष्यों से कम काम नहीं करते थे। यहां कार्नेगी स्टील कम्पनी के कारख़ानों का कुछ वृत्तांत देना अनुपयुक्त न होगा।

होमस्टेड कम्पनी

सबसे बड़ा कारखाना होमस्टेड नामक है। यह ७५ एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। इस कारखाने मे कोई ४ सहस्र मनुष्य काम करते हैं। इसमे संयुक्तप्रदेश अमरीका के जलविभाग के लिये जहाजों का सामान तैयार किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य इमारती सामान भी तैयार होता है। भट्टिया तथा 'बीस्मर कनवर्टर' (बीस्मर साहब द्वारा आविष्कृत लोहे का फौलाद बनाने वाला यन्त्र) प्रति दिन तीन हज़ार टन फौलाद तैयार करलेते हैं इस फ़ौलाद से भिन्न२ प्रकार का सामान तैयार किया जाता है। लोहे के बडे २ बोझों को उठाकर इधर से उधर लेजाने के लिये इस कारखाने मे बिजली की कलें है। दोसौ टन का बोझ उठाना तो इनके बाएं हाथ का काम है।

एडगर टामस वर्क्स

होम स्टेड के बाद एडगर टामस वर्क्स का नम्बर है। इसमे फ़ौलादी रेले तैयार कीजाती हैं। संसार के फौलादी रेल तैयार करनेवाले कारख़ानो मे इसका नम्बर सबसे बढ़ाचढ़ा है। इसकी भट्टिया २२०० टन फ़ौलाद दैनिक तैयार करती है। इसमे से १६०० टन की फ़ौलादी रेले दैनिक तैयार की जाती हैं। शेष 'होमस्टेड' नामक कारख़ाने को भेज दिया जाता है।

डिक्सी कम्पनी

तीसरा नम्बर 'डिक्सी' कारखाने का है। यहांपर रेल तथा फ़ौलाद की चादरें बनाईजाती हैं। इसकी भट्टिया प्रतिदिन २००० टन फौलाद तैयार करती हैं।

इन तीनों बडे २ कारखानो के अतिरिक्त बहुत से छोटे २ कारख़ाने हैं। कार्नेगी की कम्पनी की एक शाखा 'फर्क कोक

कम्पनी है जो अपने ढंग का अद्वितीय कारखाना है। इस कार-खाने के पास ४० हज़ार एकड़ भूमि है जिसमें कोयले की खानें हैं। इसी कारखाने के ग्रान्ट में दस हजार पांचसौ भट्टिया हैं। कार्नेगी के पास पञ्च-झील समूह के आस पास की बहुत सी ऐसी भूमि है जहा पर लोहे तथा कोयले की बहुत सी खानें हैं। इनके लाने लेजाने के लिये कार्नेगी ने अपने ही जहाज़ तथा रेल बना रक्खी हैं। सुपीरियर झील (Lake superior) के पास की लोहे की खानो का लोहा ७०० मील की दूरी पर क्लीवलैण्ड तक पहुचाने के लिये कार्नेगी ने अपना बेड़ा बनवा रक्खा है। फिर क्लीवलैण्ड से पिट्सबर्ग के चारों ओर के कारखानो में माल पहुचाने के लिये अपनी ही रेल है। कार्नेगी के पास बहुतसी ऐसी भूमि है जहां प्राकृतिक गैस पैदा होती है। इस गैस को पम्पों द्वारा कारखानों में भेजने का प्रबन्ध है। कार्नेगी ने अपने सब कारखानों मे तार भी लगवा रक्खे हैं। ये तार कार्नेगी ही के निजके हैं।

कार्नेगी के कारखानों की ठीक २ कल्पना बिना स्वयं देखे नहीं की जासकती, आज तक संसार मे कोई एक मनुष्य इतने बड़े कारखानो का स्वामी नहीं हुआ है। यदि इन कारखानों का विस्तृत वर्णन किया जाय तो एक छोटी सी पुस्तक प्रथक् ही बन जाय। अतः यहा पर पाठकों को इन कारखानों की विशालता का साधारण सा परिचय देने के लिये केवल दो एक बातों ही का वर्णन किया जाता है।

'कार्नेगी के कारखाने सुपीरियर (Superior) नामक झील से लेकर पिट्सबर्ग तक फैले हुये हैं।

पिट्सबर्ग सुपीरियर झील से कोई १,००० मील की दूरी पर है। सुपीरियर झील के किनारों से कच्चा लोहा पिट्सबर्ग को लेजाने में तीन स्थानों पर जहाज़ को बदलना पड़ता है। फिर भी दस दिन के अन्दर ही अन्दर लोहा खान में से निकल आ आता

है और पिट्सबर्ग पहुचकर फ़ौलाद के रूप में परिवर्तित भी होजाता है।

कान से लोहा निकालने के लिये भाप (Steam) की कुदालें काम में लाई जाती हैं। इस प्रकार की एक कुदाल से २५ टन बोझ लेजानेवाला गाडी ढाई मिनट में लादी जासकती है। कुदाली की प्रत्येक चोट पाच टन मट्टी उखाड़ती है। पाच चोटों मे उखाड़ी हुई मट्टी से गाडी भर जाती है।

सुपीरियर झील के पश्चिमीय तट पर दो लादने के घाट बने हुवे हैं। यहा पर सन्दूक़ों की पंक्तियां बनी हुई हैं। इन सन्दूक़ों में डेढसौ टन के लग भग लोहा आ सकता है। रेल गाडिया कान से लोहा लाकर इन सन्दूको में गिरा जाती हैं। फिर उन सन्दूकों मे से लोहा जहाजों पर लादा जाता है। कोई एक घण्टे में १००० टन लोहा जहाजां मे लाद दिया जाता है। इस हिसाब से ६००० टन बोझ लेजानेवाला जहाज लगभग ६ घन्टे में लद जाता है। सन् १८९९ ई० में सुपीरियर झील के प्रदेश से १७० टन कच्चा लोहा भरागया था।

बन्दरगाहो से लोहा गलानेवाली भट्टियो तक कच्चा लोहा बड़े २ एञ्जिनो की सहायता से लेजाया जाता है। ये एञ्जिन २२७ टन के लगभग भारी होते हैं। ये एञ्जिन एक वार में १६०० टन कच्चा लोहा तीस गाडियो मे भर कर उन गाड़ियों को गलाने की भट्टियों तक लेजाते हैं।

भट्टियों मे वेगीन स्पूर का विद्युतयन्त्र काम में लाया जाता है। इस यन्त्र की बदौलत काम करनेवाले मनुष्यों का परिश्रम बहुत कुछ कम होजाता है। इन यन्त्रों द्वारा भट्टियों मे आवश्यक कोयला बहुत शीघ्र पहुचा दिया जाता है। पानी की शक्ति से भट्टियों के द्वार खुलते और बन्द होते हैं। इन कारख़ानो को देखने के बाद देखनेवाले की ज़ुबान पर आप ही यह पद्य आजाता है:—

'ख्वाब था जो कुछ कि देखा, जो सुना अफसाना था।'

यद्यपि इतना विशाल काम था, किन्तु कार्नेगी प्रत्येक काम की देखरेख रखता था। उसने बड़े परिश्रम से एक नकशा तैयार किया था। कारखाने के मैनेजर इस नक़शे के भिन्न २ खानों को भर कर कार्नेगी के पास भेज देते थे। इस नकशे से सब बातों का ठीक २ पता चल जाता था। चाहे कार्नेगी संसार के किसी स्थान पर क्यों न हो, यह नकशा उसके पास वहीं पर अवश्य भेजा जाता था।

कार्नेगी के इस आशातीत वैभव को देखकर प्रसिद्ध करोड़-पति राकफ़ेलर तथा डी० मार्गन के मुंह में पानी भर आया। उन्होंने पक्का निश्चय कर लिया कि हम कार्नेगी की जड़ को उखाड़कर फेंक देंगे। इस आशय से उन्होंने एक 'स्टील-ट्रस्ट' स्थापित किया। जब कुछ व्यापारी किसी दूसरे व्यापारी का काम नष्ट करना चाहते हैं तो आपस में मिलकर एक बड़ी कम्पनी बना लेते है और माल कुछ दिनों के लिये टोटे से बेचने लगते हैं। इकला व्यापारी या छोटे व्यापारी इतनी हानि नहीं सह सकते। इस कारण घबराकर काम छोड़ देते हैं। इस प्रकार की बड़ी कम्पनी को अङ्गरेज़ी में 'ट्रस्ट' कहते हैं।

इस आशय से उन्होंने संयुक्तप्रदेश की आठ बड़ी २ फर्मों को मिला लिया। इस प्रकार उनकी सम्मिलित पूंजी ११ करोड़ ८० लाख पौण्ड होगई। अब उन्होंने कार्नेगी के पास कहला भेजा कि या तो तुम अपना कारखाना एक करोड पौण्ड में हमारे हाथ बेच डालो, अन्यथा नष्ट होने के लिये तैयार हो जाओ।

कार्नेगी के कारख़ाने की क़ीमत केवल १ करोड पौण्ड लगाना सर्वथा अनुचित था। उसके कारख़ाने की मालियत २५ करोड़

पौण्ड के लगभग थी। अस्सी नव्वे लाख पौण्ड,तो उसका वार्षिक लाभ ही था। कार्नेगी भला कब इन गीदड़ भवकियोंमे आनेवाला था। वह भी मुक़ाबिले के लिये तैयार होगया।

कार्नेगी ने कहा—"मैं ट्रस्ट से मुक़ाबिला करने के लिये एक और फौलादी कारख़ाना स्थापित करूंगा जो सब आधुनिक कारखानों से बढ़ा चढ़ा होगा। इसके अतिरिक्त अपनी निज की रेलें भी बनवाऊंगा। जब कार्नेगी की इतनी दृढ़ता देखी, तो ट्रस्टवाले बहुत घबराये। वह समझ गये कि कार्नेगी दृढ़-विचार है। वह अपनी असख्य दौलत की पाई २ मुक़ाबले में ख़र्च कर देना इस बात को अपेक्षा अधिक पसन्द करेगा कि अपनी मेहनत की कमाई ज़रा सी धमकी मे छोड़ दे। इसके अतिरिक्त कार्नेगी से मुक़ाबला करना भी नानी जी का घर नहीं था। कार्नेगी का काम खूब जमा हुआ था। पास यथेष्ट से अधिक पूजी थी। इन बातों के अतिरिक्त कार्नेगी की कम्पनी भी एक प्रकार का ट्रस्ट ही थी।

अन्त में ट्रस्टवालों की बुद्धि ठिकाने आगई और ट्रस्ट कार्नेगी ही की शर्तों पर उसके कारखानों को मोल लेने पर तैयारहोगई। कार्नेगी अब इस काम से अलग होना चाहता था, इस कारण राजी होगया। काम काज छोड़ने पर पिट्सबर्ग के निवासियों ने कार्नेगी को विदा-पत्र (Farewell Addıess) समर्पित किया। इस विदा-पत्र का उत्तर देते समय कार्नेगी ने अपना कारख़ाना बेच देने के विषय में कहा था,—

"जब मुझे अपना काम छोडने का अवसर मिला, तो मैंने उस अवसर से लाभ उठाना ही उपयुक्त समझा। मैंने युवाकाल ही में निश्चित करलिया था कि बूढ़ा होने से पहिले ही अपना काम काज छोड़दूंगा। क्योंकि मेरा विचार था कि मैं अपने

जीवन के अन्तिम दिनों को शान्ति, विश्राम आनन्द तथा अपनी अतुल सम्पत्ति के उचित प्रयोग में बिताऊंगा।

अपना कारख़ाना ट्रस्ट को देकर अब कार्नेगी बिल्कुल निश्चिन्त होगया। कार्नेगी के कारख़ानों की पूंजी अब २२ करोड़ ६० लाख पौण्ड तक पहुंच गई थी। उसमें से १७ करोड़ के लगभग वह मनुष्य-जाति के लाभकारी कामों में व्यय करचुका था। शेष धन उसने ५ फ़ीसदी के सूद पर लगा दिया। इस प्रकार बिल्कुल निश्चिन्त होजाने पर उसे अपनी मातृभूमि का ध्यान आया। कार्नेगी ने एक बार कहा था—"हिन्दू के लिये जो बनारस है, मुसलमान के लिये जो काबा है, ईसाई के लिये जो यरूशलम है, उन सब पूजनीय स्थानों से अधिक मुझको डम्फ़र्मलाइन है।" अतएव उसने निश्चय करलिया कि अब अपने अन्तिम दिनों की ग्रीष्मऋतु अवश्य स्काटलैण्ड की सुहावनी दलदल, पहाड़ों, झाड़ियों और झीलों में बिताऊंगा।

कार्नेगी को अमरीका से भी बहुत प्रेम होगया था। अमरीका के शहरियों के अधिकार भी उसने प्राप्त कर लिये थे। इसकारण वर्ष का कुछ भाग अमरीका में भी बिताने का विचार था। अत उसने अपने निवास के लिये न्यूयार्क में एक बहुत बढ़िया महल बनवाया। न्यूयार्क करोड़पतियों का शहर है। वहा पर एक से एक बढ़िया मकान है। यद्यपि कार्नेगी का महल किसी दूसरे करोड़पति के महल से घटकर नहीं है, किन्तु उसमें व्यर्थ की जाहिरी तड़क भड़क अधिक नहीं है। उस में अन्य करोड़पतियों के महलों के समान बेल-बूटे का अधिक काम नहा है। कार्नेगी ने मकान का नक़्शा बनवाते समय नक़्शा बनाने वालों से कह दिया था कि नक़शा बनाने में सौन्दर्य, सादगी तथा आराम -तीनों बातों का ध्यान रखना। कार्नेगी का महल पत्थर और ईंटों का बना हुआ है। सजावट के लिये सङ्गमरमर तथा कासी का भी उपयोग किया गया है।

स्काटलैण्ड मे रहने के लिये आरम्भ में कार्नेगी ने क्षालोनी कैसिल किराये पर लिया था। सन् १८६५ ई० मे उसको पता चला कि स्कीबो कैसिल बिकाऊ है। यद्यपि यह कैसिल स्काट-लैण्ड के उत्तरीय प्रदेश मे है, किन्तु यहां की आवहवा बड़ी स्वास्थ्य-प्रद है तथा बिल्कुल तर नही है। कार्नेगी ने सब बातो का पता चलाकर तत्काल इस कैसिल को ५० हज़ार पौण्ड में मोल ले लिया। जब कार्नेगी अपने नये मकान में आया तो वहां के कि-सानों ने बड़े आनन्द तथा प्रेम से उसका स्वागत किया। उन्होंने उसकी सेवा मे बधाई-पत्र (Welcome Address) उपस्थित किया। किसान लोग अपने साथ एक झण्डा ले रहे थे उस पर लिखा हुआ था—"यह झण्डा प्यारे कार्नेगी को उसकी प्रजा किसानों तथा जागीरदारों ने उस अवसर पर भेंट किया है जब वह स्कीबो का स्वामी होकर अपने घर पधारा है।"

कार्नेगी ने पुराने क़िले की इमारत में बहुत कुछ परिवर्त्तन कराया। आधे भाग को तो सुरक्षित न होने के कारण बिल्कुल ही ढवा दिया। शेषआधेभाग मे भी बहुत कुछ परिवर्त्तन कराकर बिल्कुल नूतन ढङ्ग का मकान बनवा लिया। हाल खूब लम्बा चौड़ा करा लिया तथा एक विशाल पुस्तकालय बनवा लिया। इसके अतिरिक्त क़िले के एक ओर के कोने को बढ़ाकर कुछ नये कमरे बनवा लिये। उन नये कमरो का बुनियादी पत्थर कार्नेगी की छोटी बेटी ने रक्खा था। इस अवसर पर कार्नेगी ने कहा था कि मैंने अपनी छोटी लड़की से बुनियादी पत्थर इस कारण रखवाया हैं कि जिससे वह समझ जाय कि मनुष्य-जीवन का एक उद्देश्य अपने लिये सुन्दर तथा सुखद घर बनवाना भी है।

कार्नेगी के क़िले के चारो ओर का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही नेत्ररञ्जक है। यहां पर तीतर, बटेर तथा चकोर बहुतायत से

होते हैं। कार्नेगी के मित्र बहुधा यहा पर इन पक्षियों का शिकार खेलने आया करते थे। स्वयं कार्नेगी को भी शिकार का बड़ा शौक़ था। कार्नेगी को स्वयं भी अपने स्थान के आनन्द-प्रद होने का बड़ा गर्व था। वह बहुधा कहा करता था कि मेरा निवास-स्थान पृथिवीस्थित स्वर्ग है।

चौथा प्रकरण।

कार्नेगी का मज़दूरों से झगडा।

Those who in quarrels interpose,
Must often wipe a bloody nose.

—Gay.

र्नेगी के सामने ही मालिको और मजदूरो के झगडे आरम्भ होगये थे। पूजीवाले चाहते थे कि मज़दूरो को कम से कम उजरत दी जाय तथा उनसे अधिक से अधिक काम लिया जाय। मज़दूर लोग चाहते थे कि उजरत की दर बहुत बढ़जाय तथा काम करने के घण्टे कम होजायें तथा अधिक परिश्रम न करना पडे। पूजी वालों का विचार था कि हम मज़दूरां से कोल्हू के बैल की तरह काम लेकर ही लाभ उठा सकते हैं। मजदूरो की धारणा थी कि लाभ इसी मे है कि जहातक होसके उजरत तो अधिक

लें, किन्तु काम कुछ न करके दें। दोनों एक दूसरे के विरुद्ध रहा करते थे और एक दूसरे को हानि पहुंचाने की चिन्तामें रहते थे।

कार्नेगी के विचार इनसे भिन्न थे। इसका ख़याल था कि जब तक मालिक यह न समझेंगे कि मजदूरों के फायदे में हमारा फ़ायदा है तथा मज़दूर यह न समझेंगे कि मालिकों के फायदे ही में हमारा फ़ायदा है, कारखाने की उन्नति नहीं होसकती। कार्नेगी के श्रम तथा पूंजी सम्बन्धी विचारों पर हम विस्तृतरूप से किसी और अध्याय में लिखेंगे। कार्नेगी की कृतकार्यता बहुत कुछ मजदूरों के साथ उसके सद्व्यवहार के कारण भी थी। कार्नेगी सदैव इन बातों का ध्यान रक्खा करता था कि मेरे कारखाने के मजदूरों में असन्तोष तो नहीं फैल रहा है, और यदि फैल रहा है तो किस प्रकार दूर किया जासकता है। कार्नेगी का विचार था कि मजदूरों से काम भी खूब लिया जाय किन्तु साथ ही साथ लाभ होने पर उन्हें पुरस्कार भी दिल खोल कर दिया जाय। कार्नेगी ने मज़दूरों की पेन्शन के लिये ८लाख पौण्ड पृथक् कर दिये थे।

यह सब कुछ होने पर भी, कभी २ कार्नेगी का भी मज़दूरों से झगड़ा होजाता था। उस समय कार्नेगी बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया करता था। पाठकों की जानकारी के लिये ऐसे एकाध झगडे का वर्णन किया जाता है:—

सन् १८८७ ई० मे कार्नेगी ने ब्रेडाक के कारखाने के अपने नौकरों के साथ कुछ शर्तें कीं। जब इन बातो पर हस्ताक्षर करने का समय आया तो नौकरो ने हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। कारण यह था कि ट्रेड-यूनियन के सञ्चालकों ने उन्हें इन शर्तों के विरुद्ध भडका दिया था। इस शर्तनामे के अनुसार नौकरों की उजरत की दर घटती थी तथा काम करने के घन्टे बढ़ते थे। इसकेअतिरिक्त नौकरों से किसीट्रेडयूनियन के सभासद

होने का अधिकार भी छीन लिया गया था। नौकरों से कच्चे लोहे (Cast Iron) के शर्तनामे पर भी हस्ताक्षर करने के लिये कहा गया था। इस शर्तनामे पर हस्ताक्षर करने से हस्ताक्षर करनेवाले सन् १८६० ई० से पहिले कार्नेगी की नौकरी नहीं छोड सकते थे। छोड़ने की दशा मे जेल भिजवाये जा सकते थे। नौकरों ने ऐसी शर्तों पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया तथा तत्काल २००० मनुष्यो ने काम करना छोड़ दिया। कार्नेगी आरम्भ में थोडी वहुत रियायत भी करने के लिये तैयार हुवा, किन्तु नौकर लोग राज़ी नही हुवे। फिर कार्नेगी ने भी समझ लिया कि भूख तथा सर्दी से घवराकर अन्त मे स्वय हारे झक मारेंगे तथा आकर शर्तनामो पर हस्ताक्षर करदेंगे।

मज़दूरो ने दिसम्बर मास में हड़ताल की थी। जब अप्रैल तक कुछ परिणाम न निकला तो अन्त में अपना हठ छोडने पर तैयार होगये और अपने नेताओं का डैपूटेशन कार्नेगी के पास भेजा। भोजन पाते समय कार्नेगी ने डैपूटेशन से वातचीत की। वहुत कुछ हंसी दिल्लगी के वाद कार्नेगी ने अपना शर्तनामा हस्ताक्षर के लिये उपस्थित किया। नेताओ ने कहा कि हमको नेताओ के रूप में हस्ताक्षर करने की आज्ञा दीजाय। कार्नेगी ने उत्तर दिया कि जैसे चाहो हस्ताक्षर करदो। नौकरो के नेताओ ने नेतारूप से अपने हस्ताक्षर करदिये और अपनी चालाकी पर बड़े प्रसन्न हुवे। ऐसा करने से उनको यह जीत थी कि अवसर मिलने पर वे फिर हडताल करा सकते थे और अपनी जिम्मेदारी से बच सकते थे। कार्नेगी ने हस्ताक्षर करदेने के लिये नौकर लोगों के नेताओ को धन्यवाद दिया और वोला—"मैंने आपलोगो को आपही की इच्छानुसार हस्ताक्षर करने की आज्ञा देकर वाधित किया है, अब आप लोग मेरी ख़ातिर से व्यक्तिगतरूप से भी हस्ताक्षर करके मुझको कृतार्थ कीजियेगा। वे लोग कार्नेगी

की चिकनी चुपड़ी बातों में आगये और व्यक्तिगतरूप से भी हस्ताक्षर करदिये। इस प्रकार सब झगड़ा शान्त होगया। अन्त में जीत कार्नेगी ही की रही।

दूसरा झगड़ा होमस्टेड के नौकरों से हुआ था। होमस्टेड का मैनेजर मिस्टर फ़र्क था। यह झगड़ा उसी की अदूरदर्शिता के कारण होगया था। सन् १८८८ ई० की प्रथम जौलाई को फ़र्क ने कतिपय कुशल कारीगरों से होमस्टेड कारख़ाने में तीन साल तक तैयार बीरमग फ़ौलाद पर २५ डालर प्रति टन के हिसाब से उजरत लेने पर काम करने का ठेका किया। इस अवधि की समाप्ति के निकट सन् १८९२ ई० को जून के आरम्भ में फ़र्क ने सूचना दे दी कि इस वर्ष से २२ डालर प्रति टन से अधिक की उजरत नहीं दीजायगी। बहुत कुछ कहने सुनने पर फ़र्क ने २३ डालर प्रति टन कर दी, किन्तु कारीगर २४ डालर से कम पर काम करने के लिये राज़ी न हुवे। इसके अतिरिक्त फ़र्क साहब ने कारीगरों को इस बात का नोटिस और देदिया कि कि आगामी ठेका आधे जाड़ों ही में समाप्त हो जायगा। इससे पहिले ठेका आधी गर्मियों में समाप्त हुआ करता था। इस परिवर्त्तन से कारीगरों को हानि पहुंचती थी। अतएव वे इस परिवर्त्तन पर राज़ी न हुवे।

इसी प्रकार आपस में खैंचातानी बढ़ती गई। अन्त में ३० जून को कारीगरों ने काम बिल्कुल बन्द कर दिया। किन्तु इस बीच में फ़र्क भी बिल्कुल बेख़बर नहीं रहा था। उसने नान-यूनियनिस्ट मज़दूरों (वे मज़दूर जो मज़दूर सभा के सभासद नहीं होते हैं) काम करने के लिये तैयार करलिया था। उनकी रक्षा के लिये ३०० जवानों का प्रबन्ध करलिया था। इसके अतिरिक्त कारख़ाने की रक्षा के लिये चारों ओर खाई भी खुदवा ली

थी। क्योंकि हड़ताल मे लड़ाई की नौबत भी आजाती हैं। काम छोड़े हुये मज़दूर अपने स्थान पर कामकरनेवाले नान-यूनियनिस्ट मज़दूरों पर हमला कर वैठते हैं तथा कारख़ाने पर भी टूट पड़ते हैं।

इस प्रकार दोनो पार्टियें खूब तैयार होगईं। इसके पश्चात् प्रत्येक पार्टी ने दूसरी पार्टी के विरुद्ध झूंठी सच्ची अफ़वाहें फैलाना आरम्भ किया, क्योंकि वहुधा विजय उसी पार्टी के हाथ रहती है जिसके साथ सर्व साधारण की सहानुभूति होती है। अनेक प्रकार की अफ़वाहें उड़ी जिनकी सत्यता की जाच नहीं होसकती। उदाहरणतः मज़दूर लोगों ने उड़ा दिया कि—कारख़ाने के हाते के ऊपर लगा हुआ ज़हर का वुझा तार मज़दूरों को मारने के लिये लगा दिया गया है। इसमे इतनी विद्युतशक्ति है कि जो मनुष्य छुवेगा, तत्काल मर जायगा। इसी प्रकार यह अफ़वाह भी गरम करदी गई कि मज़दूर लोग रसोइयों से मिलकर इस वात का षडयन्त्र रच रहे हैं कि नानयूनियनिस्ट मज़दूरों के खाने मे विष मिलवा दिया जाय।

कारख़ाने के दरवाज़ों पर कड़ा पहरा लगा दिया गया। शहर के दरवाज़ों पर भी सिपाही आने जाने वाले मनुष्यो पर कड़ी नज़र रखने लगे। हर वक्त इस वात का डर रहने लगा कि न मालूम किस वक्त लूट मार होजाय। अव फ़्रिक ने सोचा कि विना उन तीन सौ जवानो के वुलाये, जिनका प्रवन्ध किया गया है। काम नही बनेगा। इन जवानों का सरकार से कुछ सम्बन्ध नही था। कारख़ानेवालों ने मज़दूरो से झगड़ा होने के समय उन से कारखानों की रक्षा करने के लिये एक प्रकार की पुलिस वना ली थी जो 'पिन्करटन' के नाम से प्रसिद्ध थी। ये जवान उसी संस्था के थे। किन्तु ये जवान इस समय होमस्टेड में नही थे। वे पिट्सवर्ग में थे। अव इस वात की चिन्ता हुई कि उनको

कारख़ाने में किस प्रकार लाया जाय, क्योंकि मज़दूर लोग शहर के दरवाज़ों पर ही बन्दूकों द्वारा उनका स्वागत करने के लिये तैयार थे।

अन्त में यह निश्चित हुआ कि पिन्करटनों को आधी रात के के समय कारख़ाने में लाया जाय जिससे किसी को ख़बर न हो। ६ जौलाई को दोपहर के समय ३०० पिन्करटन ज़िले के डिप्टी शैरिफ़ (मजिस्ट्रेट) के साथ एक स्टीमर तथा दो किश्तियों में बैठ कर पिट्सबर्ग से होमस्टेड के लिये चले। यद्यपि सब प्रबन्ध बड़ी गुप्त रीति से किया गया था, किन्तु ऐसी बात भला कब गुप्त रह सकती है.। जिस समय ये लोग होमस्टेड पहुचे तो देखा कि नदी के किनारे पर सहस्रों मनुष्य, स्त्रियें तथा बच्चे खड़े हुवे हैं। किसी मनुष्य के हाथ में डन्डी है, किसी के हाथ में तमञ्चा है। पिन्करटन लोगों के पास भी तमञ्चे थे।

अब किनारे पर पहुचने की बड़ी विकट समस्या हो गई। बहुत कुछ वाद विवाद के बाद १०० जोशीले जवान हाथों में भरी हुई बन्दूकें लेकर किश्तियों द्वारा किनारे पर जाने के लिये उद्यत हुवे। इधर काम बन्द करने वालों ने भी पूरा सामान कर रक्खा था। उन्होंने भी गोलेबारी आरम्भ कर दी। नदीमें मिट्टी का तेल डाल नावों में आग लगाने का भी प्रयत्न किया गया। किन्तु हवा उलटी चल रही थी इस कारण इस प्रयत्न में कृतकार्यता नहीं हुई। अन्त में पिन्करटन लोगों को डिप्टी शैरिफ़ सहित लौटना पड़ा। इस लड़ाई झगड़े का परिणाम यह हुआ कि छः कारीगर जान से मारे गये तथा १८ ज़ख़्मी हुवे। ६ पिन्करटन जान से मारे गये तथा २१ ज़ख़्मी हुवे।

इन लड़ाई दंगों का समाचार मालूम होने पर प्रान्तीय गवर्नर ने शान्ति स्थापन के लिये ८ हज़ार फ़ौज भेजी। इस फ़ौज ने

जाकर कारख़ाने को अपनी सरक्षकता मे ले लिया। इस झगडे ने अब बडा विकटरूप धारण कर लिया था। दोनो ओर की बड़ी हानि होरही थी। कारीगरो की आमदनी बन्द थी। कार्य बन्द होने के कारण कम्पनी की दस हज़ार पौण्ड दैनिक की हानि हो रही थी। इसके अतिरिक्त आठ हज़ार फ़ौज रखने का व्यय ४००० पौण्ड दैनिक पड रहा था। ऐसी दशा देख कर कांग्रेस ने इस मामले की जाच करने के लिये एक कमीशन नियत किया।

कमीशन ने इस झगडे का ज़िम्मेदार फ़र्क को ठहराया। कमीशन ने कहा कि यह सब झगडा फर्क की अनुचित हट तथा अपनी ही बात पर अडे रहने के कारण हुआ है। कारीगरों के नेता ओडोनल ने समझौते के लिये बड़ा प्रयत्न किया था। जब फ़र्क ने इस विषय मे वाद विवाद करना बिल्कुल बन्द कर दिया, तो ओडोनल ने फिर बात चीत प्रारम्भ करने के लिये लिखा कि अब जो मैं शर्तें भेज रहा हूं, अवश्य उन पर कारीगरो का समझौता हो जायगा। किन्तु फ़र्क ने एक न सुनी। फिर ओडोनल ने कार्नेगी से इस विषय मे पत्र व्यवहार करने का विचार किया। कार्नेगी उन दिनो स्काटलैण्ड में था। उसका पता उसके कारख़ाने के मैनेजरो ही को मालूम था। फ़र्क ने कार्नेगी का पता बताने से भी इन्कार कर दिया। बाद मे लन्दन मे रहने वाले अमरीकन कौन्सिल से कार्नेगी का पता मालूम हुआ।

कार्नेगी का पता मालूम होने पर कारीगरो ने तार द्वारा अपनी शर्तें उसके पास भेजी। कार्नेगी ने उत्तर भेज दिया "मुझे तुम्हारी शर्तें पसन्द हैं। फौरन फ़र्क साहब से समझौता कर लो।" फ़र्क से जब इस विषय की बाते फिर छेड़ी गईं तो उसने टकासा जवाब देदिया, कि यदि कार्नेगी प्रेसीडैण्ट हैरिसन तथा समस्त सभा के साथ आये तो भी मैं काम बन्द कर देने के झगड़े को तय नही कर सकता। कार्नेगी यह कहकर बीच मे

पड़ने से छूट गया कि–" कार्नेगी स्टील कम्पनी के सब अफ़सर एक वर्ष के लिये चुने गये हैं। इस अवधि में मैं उनके कामों में दख़ल नहीं दे सकता।"

जस २ सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दुगुन कपि रूप दिखावा।

के अनुसार मामला बढ़ता ही गया। अन्त में जनवरी मास (१८९३ ई०) में जब कार्नेगी स्वयं स्काटलैण्ड से लौटा तो कारीगरों को बहुत कुछ समझा बुझा कर मामले को शान्त किया।

पांचवां प्रकरण ।

कार्नेगी का स्वभाव तथा चरित्र ।

Fame is what you have taken,
Character's what you give,
When to this truth you waken
Then you begin to live

—Bayard Taylor.

र्नेगी ठिगने क़द का था। उसका क़द पांच फिट चार इञ्च था। आखें भूरी तथा माथा चौडा था। वह बड़ा हंसमुख था। मरते समय तक उसका स्वभ व तथा उस की बात चीत युवक मनुष्यों की सी रही, केवल उसके श्वेत बाल उसके बुढ़ापे की साक्षी देते थे। वह सदैव हस मुख रहता था। क्रोधतो उसको बहुतही कम आताथा। हसी दिल्लगी से बड़ा प्रसन्नहोताथा। वह आप्टिमिज़्म अर्थात् सुखवाद (Optimism) के नीले आकाशों को पैस्सीमिज़्म अर्थात् दुःखवाद (Passimism)

के अन्धकारमय गढ़ों से .. च्छा समझता था। एम० मैक्लारन ने कार्नेगी के विषय में लि था—"जब मैं ने पहिली बार कार्नेगी को देखा तो मुझ को नुमान से प्रतीत हुआ कि मेरे सन्मुख कोई हंसमुख, दृढ़ मस्ति क तथा सभ्य मनुष्य खड़ा है।" यद्यपि कार्नेगी का क़द नाटा किन्तु उसका मस्तिष्क बड़ा था। करोड़ों रुपये दा.. मे दे ाले ह... छोटे ही थे। वह छ इञ्च का दस्ताना तथा सात इञ्च की टोपी पहिनता था।

कार्नेगी का स्वास्थ्य इतना परिश्रम करने पर भी बहुत अच्छा रहता था। इस का कारण यह था कि वह बहुत परहेजगार था। शराब कभी दो चार घूट पीलेता था तम्बाकू बिल्कुल नहीं पीता था। स्वर्गीय ग्लैडस्टन के समान कार्नेगी को भी इस बात की आदत थी कि वह जब चाहता था, सो जाता था। जब काम का ज़ोर रहता था तो रात को पूरा सोने का समय नहीं मिलता था, ऐसे दिनों मे जिस समय उसे दिन में काम काज से थोडा भी अवकाश मिलता था, नींद की कमी पूरी करने में लग जाता था।

कार्नेगी बहुत धीरे से बोलता था, किन्तु उसका प्रत्येक शब्द स्पष्ट सुनाई देता था। वह कभी किसी प्रश्न का उत्तर बे सोचे समझे नहीं देता था। उसका विचार था कि एक बार बोलने से पहिले दो बार सोच लेना चाहिये। बिना पूर्णतया परिचित हुवे वह किसी मनुष्य को वचन नहीं देता था।

कार्नेगी को खेल का बड़ा शौक था। एक बार कार्नेगी स्कीबो क़िले के ग्राउण्ड में क्रिकेट खेल रहा था। खेलने में जो एक हिट ज़ोर का लगा तो पास खड़े हुवे अपने एक मित्र से बोल उठा—"यदि दस हजार डालर ख़र्च करने पर भी ऐसा आनन्द मिल सके तो भी सस्ता है।"

गाड़ी पर सवार होकर सैर करने का भी कार्नेगी को बड़ा शौक़ था। उसने गाड़ी पर चढ़ कर अमरीका तथा ब्रिटिश आइल्स मे हज़ारों मील की यात्रा की थी। नाव मे बैठ कर या जहाज़ पर बैठ कर नदी या समुद्र की सैर करने मे भी उसे बड़ा आनन्द आता था। वह कहा करता था—" जब मैं किसी सुन्दर नौका में बैठ कर नदी का सुन्दर दृश्य देखता हूं तो मुझे ससार के सारे पदार्थ तुच्छ मालूम पड़ते हैं। लहरों के उठने के समय मैं अपने आप को युवक समझने लगता हूं।" तूफान के समय उसे बड़ा आनन्द आता था। जब तूफान के कारण जहाज़ आगे पीछे हटता था तो वह कहा करता था—"जहाज़ ठीक उसी प्रकार आगे पीछे हट रहा है जिस प्रकार घोड़ा अपने सवार को प्रसन्न करने के लिये पीछे को हटता तथा आगे को कूदता है।"

कार्नेगी को किसानों से बात चीत करने में बड़ा आनन्द आता था। जब कार्नेगी स्कीबो में रहता था तो घण्टो किसानो के साथ बात चीत मे लगा रहता था। वह कहा करता था कि ऐसी दशा मे मै सासारिक झंझटों को बिल्कुल भूल जाता हूं। उसने अपनी टोपी की कलगी मे एक हाथ का चित्र बनवाया था जिसके नीचे लिखा हुआ था-"केवल ईश्वर से डरो।"

कार्नेगी को केवल अपने ही व्यवसाय का ज्ञान नहीं था वरन् सब विषयो में थोड़ी बहुत पहुच थी। कार्नेगी ने अमरीका तथा इङ्गलैंड के लगभग सब प्रसिद्ध मनुष्यों से बातचीत की थी। जो कार्नेगी से बातचीत करता था, उसकी विद्वत्ता का क़ायल हो जाता था। इसका कारण यह था कि उसे पुस्तकें तथा समाचार पत्र पढ़ने का बडा शौक़ था। प्रति दिन दर्जन भर दैनिकपत्रों से कम नहीं पढता था। साप्ताहिक समाचारपत्र तथा मासिक-पत्र, पत्रिकाएं इससे पृथक् रही। वह पत्र बडी जल्दी देखता था।

अपने काम की बात घोट लेता था, शेष बातें छोड़ देता था। साहित्यानुशीलन से भी उसे बड़ा प्रेम था। प्रत्येक समय के बड़े २ लेखकों के प्रसिद्ध ग्रन्थों को उसने पढ़ा था। शेक्सपियर तथा बर्न्स (Burns) की पुस्तकें अधिकतर पढ़ा करता था।

कार्नेगी लेखक भी बहुत अच्छा था। मनोरञ्जक तथा प्रभाव-शाली भाषा लिखने में उसका खास हिस्सा था। वह बहुधा राजनैतिक, सामाजिक तथा शिल्प व्यवसाय सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखा करता था। बहुत से लेख लिखने के अतिरिक्त उसने तीन पुस्तकें भी लिखी थीं। पहिली पुस्तक का नाम 'Round the World' (संसार का चक्कर) है। यह पुस्तक सन् १८७९ ई० में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक में कार्नेगी ने अपनी संसार यात्रा का मनोरञ्जक वृत्तान्त लिखा है। दूसरी पुस्तक का नाम 'Our Coaching Trip' (हमारी गाड़ी की यात्रा) है। इस पुस्तक में गाड़ी में बैठकर की हुई यात्रा का वर्णन है। यह पुस्तक भी बड़ी मनोरञ्जक है। इसका प्रकाशन सन् १८८३ ई० में हुआ था।

तीसरी पुस्तक 'Triumphant Democracy' (विजयी प्रजा तन्त्र) है जो सन् १८८६ ई० में प्रकाशित हुई थी। कार्नेगी की यह पुस्तक बहुत प्रसिद्ध है। दो साल ही में इस पुस्तक की चालीस हजार प्रतियां बिक गई थीं। इस पुस्तक में कार्नेगी ने प्रजातन्त्र राज्य-प्रणाली के गुण दिखाये हैं तथा एक-तन्त्र राज्य प्रणाली की बड़ी कड़ी आलोचना की है। यह सिद्ध किया है कि अमरीका की इतनी उन्नति प्रजातन्त्र राज्य होने ही के कारण हुई है। कार्नेगी ने अपनी बातों की पुष्टि प्रमाणों द्वारा की है। समर्पण करते हुये कार्नेगी ने लिखा है—' मैं इस पुस्तक को सर्वप्रिय प्रजातन्त्र राज्य को भेंट करता हूं, जिसके कारण मैं करोड़पति

बनगया, यद्यपि मेरे देशवाले मनुष्यों के समानाधिकार मानना स्वीकार नहीं करते।"

कार्नेगी को अपनी माता से बहुत प्रेम था और उसका बड़ा सम्मान किया करता था। जब तक वह जीवित रही, उसने विवाह नहीं किया। उसके मरने के उपरान्त भी कार्नेगी उसकी बड़ी प्रशंसा किया करता था। एक बार कार्नेगी ने कहा था—"मेरी सब आकांक्षाये मेरी माता ही के कारण थीं। मुझे इसी कारण दौलत पैदा करने की आकांक्षा थी जिससे उसके अन्तिम दिवस आनन्द से व्यतीत हों। मुझे बड़ा हर्ष है कि मेरी माता ८० वर्ष की होकर मरी।"

छठा प्रकरण ।

कार्नेगी की मृत्यु ।

He gave his honours to the world again,
His blessed part to heaven, and slept in peace.

—Shakespeare

सन् १९०१ ई० में कार्नेगी ने अपने सब कारखाने युनाइटेड-स्टेट्स स्टील कारपोरेशन (United States Steel Corporation) को देकर अपना शेष जीवन शान्ति, आनन्द तथा परोपकार में व्यतीत करने का निश्चय कर लिया। इसके पश्चात् कार्नेगी ने अपने शेष जीवन का अन्तिम भाग अपनी जन्मभूमि डम्फ़र्मलाइन में बिताया।

११ अगस्त सन् १६१६ ई० को इस महा पुरुष ने इस संसार से सदैव के लिये नाता तोड़ दिया। निस्सन्देह यह महापुरुष अपने समय का कुबेर था। उसकी दैनिक आय १५०००) रुपये थी। किन्तु कुबेर होने के साथ २ अपने समय का कर्ण भी था। जौलाई सन् १६१८ तक कार्नेगी ने परोपकार में १,५००,००००० रुपये खर्च किये थे। कुबेर तथा कर्ण की कथायें प्राचीन समय की हैं। सम्भव है उनके वृत्तान्तो मे कवि-कल्पना का भी बहुत कुछ भाग हो। किन्तु कार्नेगी का स्वर्गवास हुवे तो अभी दो ढाई वर्ष ही हुवे हैं। उसकी अतुल सम्पत्ति तथा दान-वीरता मे सन्देह करना मानो सूर्य के प्रकाश में सन्देह करनाहै। कार्नेगी के विषय में जो बातें लिखी गई हैं वे सोलह आने सच हैं।

कार्नेगी ने अपने जीवन का एक मात्र उद्देश्य परोपकार तथा मनुष्य जाति की सेवा समझ लिया था। और है भी ठीक—

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव।

—कालिदास।

अर्थात् बादलों के जलसञ्चय की भांति, सत्पुरुषों का धन-सञ्चय औरों को देदेने के लिये ही होता है।

कार्नेगी की उदारता, दयालुता आदि गुणों को देखकर हम कह सकते हैं कि यदि आवागमन का सिद्धान्त ठीक है तो कार्नेगी पूर्वकाल का कोई महर्षि ही होगा और आगे भी कहीं

. . .. ।

हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे परोपकारी महापुरुष के जीवन को सदैव ध्यान मे रखते हुवे अपने जीवन को सुधारने का प्रयत्न करते रहें।

एक अङ्गरेज़ विद्वान् का कहना है:—"मनुष्य के भीतर अनेक शक्तियां गुप्त रहती हैं। यदि उनके किञ्चित् प्रकाश से भी मनुष्य

शक्तिमान् बनने का प्रयत्न करें तो उसका जीवन बहुमूल्य बन जाय—उसमें एक नई जीवनी शक्ति का सञ्चार होने लगे।" कार्नेगी का जीवन इस कथन की सत्यता को पूर्णतया प्रगट करता है। कार्नेगी आरम्भ में एक जुलाहे का लड़का था। जुलाहे से करोडपति--नहीं २ अरब-पति बनने-में उसे बड़ी २ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। नये२ तथा अनभ्यस्त कार्यों को करना पड़ा तथा अनेक विघ्न बाधाओं को लाघना पड़ा, किन्तु कार्नेगी ने इन अड़चनों की कुछ भी परवाह न की और निराशा को पास नही फटकने दिया। परिणाम यह हुआ कि अन्त मे आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की। सब मनुष्यों के अन्दर अनेक शक्तिया छिपी पड़ी हैं। खेद की बात तो यह है कि हम उन शक्तियों को जानते नहीं। जानें भी कैसे? जानने का प्रयत्न ही नहीं करते। हमको तो अपने भाग्य को कोसने से ही अवकाश नहीं मिलता। सदैव यही कहते रहते हैं, "कैसे अभागे हैं?" हम यही कहते हुवे कि—

होगा वही जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढावहि साखा॥

अपने जीवन को घोर अन्धकार तथा विषम नैराश्य मे नष्ट करते रहते हैं। हम नहीं जानते कि हमारे अन्दर अनेक अज्ञात शक्तियां केवल हमारे आदेश की प्रतीक्षा कर रही है। यदि हम कठिनाइयों से घबराने के स्थान में ताल ठोक कर उनका सामना करने के लिये उद्यत हो जायेंगे तो हम देखेंगे कि एक नूतन शक्ति हमारे सामने हाथ जोडे खड़ी है। किसी कठिनाई का हमारे सामने आना ही इस बात को प्रमाणित करता है कि हम उसका सामना करने की योग्यता रखते हैं। यदि उस कठिनाई का सामना करने की योग्यता न रखते तो वह कठिनाई हमारे सामने आती ही नहीं। क्या ही अच्छा हो यदि कार्नेगी के जीवन

से हम अपनी आन्तरिक गुप्त शक्तियों का महत्व समझ कर उन के जागृत करने तथा अपने जीवन को कार्नेगी के जीवन के समान सफल, उच्च, उपयोगी तथा अनुकरणीय बनाने का प्रयत्न करें।

यद्यपि अब कार्नेगी इस ससार मे नही है, किन्तु जब तक संसार मे लेशमात्र भी कृतज्ञता का भाव रहेगा, उसके नाम को कोई नही मिटा सकता।

Can that man be dead
Whose spritual influence is upon his kind ?,
He lives in glory, and his speaking dust
Has more of life than half its beathing mould

—Miss Landon.

सातवां प्रकरण।

कार्नेगी की कृतकार्य्यता का रहस्य।

One thing is for ever good,
That one thing is success

—Emerson
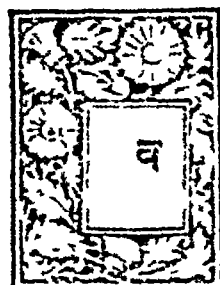
हुत से मनुष्यों का विचार है कि कार्नेगी तक़दीर से जुलाहे से करोड़-पति बन गया है अत किसी अन्य मनुष्य का करोड़पति होने के लिये कार्नेगी के जीवन का अनु-सरण करना नितान्त मूर्खता है। किन्तु यह विचार नितान्त भ्रम-मूलक है। जिन लोगों का ऐसा विचार है, उन्होंने कार्नेगी के जीवन का ठीक प्रकार से अध्ययन ही नहीं किया है। कार्नेगी को करोड़पति बनने मे किसी दैवी शक्ति की सहायता नही मिली है। उसने किसी देवता की कठिन तपस्या

नही की थी जिसने प्रसन्न होकर उसे करोड़पति बना दियाहो— न उसे इतनी अतुल सम्पत्ति किसी लाटरी द्वारा ही मिली थी। कार्नेगी अपनी बुद्धिमत्ता तथा परिश्रम ही से करोड़ पति हुवा है। प्रत्येक बुद्धिमान् तथा परिश्रम-शील मनुष्य कार्नेगी के जीवन का अनुसरण करके उसीके समान कृतकार्य हो सकता है।

कार्नेगी को इतनी कृतकार्यता उसके निम्नलिखित गुणो के कारण हुई थी:—

(१) अवसर की ताक मे रहना।

(२) अवसर मिलने पर उस से यथा शक्ति लाभ उठाने का प्रयत्न करना।

(३) अपने प्रत्येक काम को ठीक समय पर ठीक रीति से करना।

(४) अपने नौकरों के साथ अच्छा वर्ताव करना।

[१] अवसर की ताक में रहना।

हम में से अधिकतर मनुष्यों की दृष्टि इतनी कमज़ोर होती है कि हम जिस दशा में होते हैं उससे उच्च दशा को नही देख सकते। हम चाहते हैं कि दस वर्ष बाद १०० रुपये मासिक मिलने से यही अच्छा है कि एक वर्ष बाद दस रुपये मासिक ही मिलने लगे। कार्नेगी यह नही कहता कि नीची नौकरी स्वीकार मत करो। नहीं, नीची से नीची नौकरी स्वीकार करलो। काम कोई नीच नही है। चोरी, हरामख़ोरी तथा धोखा देकर दूसरे का माल लूटना नीचता है। किन्तु जो बात ध्यान मे रखने योग्य है वह यह है कि उसी नौकरी को अपने जीवन की इतिश्री नही समझ लेना चाहिये। अपनी आकांक्षायें उच्च रखनी चाहियें। केवल उच्च आकांक्षायें रखना भी पर्याप्त नही है। उन आकांक्षाओं की पूर्ति करने का प्रयत्न भी करते रहना चाहिये। कार्नेगी ने

आरम्भ में ५ शिलिंग अर्थात् ३॥) साप्ताहिक पर ही काम करना आरम्भ किया था। यह काम बड़ा कठिन था। किन्तु कार्नेगी इस से घबराया नहीं। दिन रात अपनी दशा को सुधारने के प्रयत्न में लगा रहा। अवसर मिलते ही इस काम को छोड़ दिया और १२ शिलिंग अर्थात् ६ रुपये मासिक पर तार बांटने का काम लेलिया। इस काम के मिलनेपर भी अपनीदशा और सुधारने का ध्यान बराबर बना ही रहा। बचे खुचे समय में तार देने का काम सीखने लगा और कुछ काल पश्चात् तार बाबू हो गया। इस पद को भी अपना अन्तिम ध्येय नहीं समझा। अपनी दशा को उन्नत करने के प्रयत्न में लगा ही रहा। परिणाम यह हुआ कि संसार का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा धनपति हो गया।

[२] अवसर से लाभ उठाना।

कविवर शेक्सपियर कहगये हैं:—

There is a tide in the affairs of men,
Which taken at its flood leads on to fortune

शेक्सपियर की इन दोनों पक्तियों का प्रत्येक शब्द सत्य से भरा हुआ है।

विधाता एक मनुष्य को भाग्यशाली तथा दूसरे को अभागा नहीं बनाता। भाग्य केवल अवसर (chance) है। अवसर प्रत्येक मनुष्य को मिलता है। जो मनुष्य उस अवसर से लाभ उठा लेता है, उसी को लोग भाग्यशाली कहने लगते हैं। जो मनुष्य अवसर से लाभ उठाना नहीं जानता वही अपने को अभागा समझ कर विधाता को दोष देता रहता है। किन्तु अवसर प्रत्येक मनुष्य को मिलता है। इस कारण प्रत्येक मनुष्य, यदि वह प्रयत्न करे, तो भाग्यशाली बन सकता है।

कार्नेगी की कृतकार्यता का सब से बड़ा रहस्य यही है कि उसने अवसर को कभी हाथ से नहीं जाने दिया। सबसे पहिले

कार्नेगी को जब कि वह तार के चपरासी का काम कर रहा था, तारबाबू की अनुपस्थित के कारण अपनी योग्यता दिखाने का अवसर मिला। कार्नेगी ने इस अवसर से पूरा लाभ उठाया। इस के बाद कार्नेगी को एक्सप्रेस कम्पनी के दस हिस्से मोल लेने का अवसर मिला। यद्यपि उस समय कार्नेगी के पास यथेष्ट धन नही था, किन्तु फिर भी कार्नेगी ने इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। तत्पश्चात् रेलवे दुर्घटना के समय स्काट साहब की अनुपस्थिति के कारण कार्नेगी को अपनी योग्यता दिखाने का फिर अवसर मिला। इस अवसर से भी कार्नेगी ने लाभ उठाया और स्काट साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी बन गया। "स्लीपिङ्ग-कार" (Sleeping cars) के आविष्कार से भी सब से पहिले कार्नेगी ही ने लाभ उठाया। मट्टी के तेल द्वारा लाभ उठाने का अवसर भी कार्नेगी ने हाथ से नही जाने दिया। जब दूसरे मनुष्य इस बात का विचार ही कर रहे थे कि लकड़ी के बजाय लोहे के पुल बनाये जायें, कार्नेगी ने लोहे के पुल बनाना आरम्भ भी कर दिया और भर पेट लाभ उठाया।

इन अवसरो से लाभ उठाने का ही परिणाम था कि कार्नेगी जुलाहे से करोड़ पति हो गया। कार्नेगी को लाभ उठाने के बहुत से अवसर मिले और उसने इन सबसे लाभ उठाया।

यह बात नही है कि कार्नेगी को लाभ उठाने के इतने अवसर दैव-योग से मिल गये थे। यदि दैव योग से अवसर मिल सकता है तो एकाध बार, सदैव नही। ऐसे अवसर प्रत्येक मनुष्य को मिल सकते हैं। केवल उनसे लाभ उठाने की आवश्यकता है।

[३] प्रत्येक काम को ठीक समय पर ठीक रीति से करना।

साधारण मनुष्य को एक छोटे से कारखाने की देख रेख रखना भी कठिन हो जाता है। कार्नेगी का कारखाना दुनिया के

सबसे बड़े कारखानों में से था। इस पर भी कार्नेगी अपने कारखानो के रत्ती २ हाल से परिचित रहता था। इसका कारण यही था कि कार्नेगी प्रत्येक काम को ठीक समय पर ठीक रीति से करता था।

उसके कमरे में एक बड़ा डेस्क रहता था। डेस्क में बहुत से खाने बने होते थे। प्रत्येक खाने के ऊपर लेबिल लटके रहते थे। किसी के ऊपर लिखा रहता था 'कार्नेगी स्टील कम्पनी की रिपोर्ट', किसी पर 'पुस्तकालय विषयक पत्र व्यवहार', किसी पर रुपया चुकाये हुवे बिल', किसी पर 'दान', किसी पर 'पुस्तकालय विषयक पत्र व्यवहार'। इसी प्रकार प्रत्येक विषय के कागज़ों के लिये पृथक् २ खाना रहता था। इस के अतिरिक्त कार्नेगी ने भिन्न २ विषयों पर विचार करने के लिये तथा उन विषयों से सम्बन्ध रखने वाले पत्र व्यवहार के लिये समय नियत कर रक्खा था। इसी कारण प्रत्येक दिन के काम को उसी दिन समाप्त कर देता था तथा मनोरञ्जन के लिये भी समय निकाल लेता था।

कार्नेगी के पास प्रति दिन ३०० के लगभग पत्र आते थे। इसके अतिरिक्त कारखानों का भी बहुत सा काम रहता था। कार्नेगी पत्रों में लेख भी लिखा करता था। इसके लिये समय की आवश्यकता होती थी। किन्तु कार्नेगी सब कामों के लिये समय निकाल लेता था। दैनिक कामों में कार्नेगी को अपने मन्त्री श्रीयुत जेम्स बैटराम से भी बड़ी सहायता मिलती थी।

कारखानों का काम सुचारु-रूप से चलने के लिये मज़दूरों के सहयोग की बड़ी आवश्यकता रहती है। एकाध बार कार्नेगी का भी मज़दूरों से झगड़ा हुवा, किन्तु सब बातों पर विचार करके यही कहना पड़ेगा कि कार्नेगी का अपने मज़दूरों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार था तथा मज़दूर उससे सन्तुष्ट रहते थे।

[४] मज़दूरों के साथ अच्छा व्यवहार ।

स्वयं कार्नेगी का कहना है कि वह अपने मज़दूरों से इङ्गलेण्ड के कारखाने वालों की अपेक्षा दूना काम लेता था, किन्तु साथ साथ ही उन्हें मज़दूरी भी वैसी ही देता था। इसी कारण मज़दूर उससे सन्तुष्ट रहते थे।

कार्नेगी ने एक स्थानपर लिखा है:—

मैं अपने तज़ुरबे से कह सकता हूं कि जो फ़र्म अपने नौकरों के साथ रियायत करती है तथा उनका भला चाहती है, उसे उन्नति करने का अधिक अवसर मिलता है, क्योंकि योग्य पुरुष ऐसी फर्म में नौकरी करने के लिये आकर्षित होते हैं तथा ऐसी फ़र्म से सम्बन्ध त्याग करना पसन्द नहीं करते।

कार्नेगी ने अपने कारीगरों के लिये पुस्तकालय, वाद्‌नालय (Music Hall) तथा क्लब स्थापित कर रक्खे थे। उसने ८ लाख पौण्ड अपने कारख़ाने के कारीगरों के पेन्शन फ़ण्ड के लिये पृथक् कर दिये थे। कार्नेगी अपने कारीगरों को बचाया हुवा रुपया तिजारत में लगाने मे भी सहायता देता था। यदि कार्नेगी का कोई कारीगर मकान मोल लेना या बनाना चाहता था तो कार्नेगी उस को इस काम के लिये थोड़े सूद पर रुपया उधार भी दे देता था।

कार्नेगी की बड़ी इच्छा थी कि मज़दूरी के घण्टे कम हो जायें। उन दिनों अमरीका मे कोई कारख़ाना या भट्टी ऐसी न थी जो रात दिन मे न जारी रहती हो तथा जिस में २४ घण्टे बारह २ घण्टे के दो भागो मे विभक्त न हों। कार्नेगी ने सब से पहिले काम करने के घण्टों की संख्या १२ के स्थान मे आठ कर दी। कार्नेगी का विचार था कि और कारख़ाने वाले भी इस प्रथा का अनुसरण करेंगे। किन्तु कार्नेगी का अनुमान ठीक नहीं

निकला। समस्त अमरीका में केवल एक कारखाने ने कार्नेगी का अनुसरण किया। इस कारण आपस की प्रतिद्वन्द्विता के कारण काम करने के घण्टे घटाने की वजह से कार्नेगी को ८ लाख पौण्ड के लगभग हानि उठानी पड़ी। इस कारण विवश हो कर कार्नेगी ने भी काम करने के घण्टे फिर पूर्ववत् आठ के स्थान में बारह कर दिये।

इन्हीं सब गुणों के कारण कार्नेगी के कारीगर उससे प्रेम करते थे। ब्रैडक के मज़दूरों के झगड़े के समय यूनियन के चेयरमैन ने जन साधारण की सभा मे वक्तृता देते हुये कहा था—"यदि कार्नेगी इस समय ब्रैडक में होता, तो मामला कभी भी ऐसी सूरत न पकड़ता।" लड़ाई दगा आरम्भ होने से पहिले मज़दूरों ने कार्नेगी को इस विषय का तार दिया था, "दयालु स्वामी! बतावो तुम हम से क्या कराना चाहते हो।" किन्तु कार्नेगी के पास यह तार पहुचने से पहिले ही लड़ाई दगा आरम्भ हो गया और घटना की दूसरी ही सूरत हो गई।

कार्नेगी के इन गुणों से कारखाने वालों के अतिरिक्त अन्य मनुष्य भी बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं।

आठवां प्रकरण।

कार्नेगी के कारण कृतकार्यता प्राप्त कुछ मनुष्य।

He could raise scruples dark and nice,
And after solve 'em in a trice,
As if Divinity had catch'd
The itch, on purpose to be scratch'd

—Butler

I pride my self in recognizing and upholding ability in every party and wherever I meet it

—Beaconsfield.

र्नेगी को आलसी मनुष्यों से जितनी घृणा थी, उतना ही परिश्रमी तथा योग्य मनुष्यों से प्रेम था। कार्नेगी किसी को अपने यहां नौकर रखते समय या वेतन अथवा पद-वृद्धि करते समय दोस्ती या रिश्तेदारी का बिलकुल ध्यान नहीं रखता था। कार्नेगी ने अपने पहिले रिश्तेदार डी० ए० स्टुअर्ट तथा अपने भाई टाम कार्नेगी के बेटों को नौकरी करने की इच्छा प्रगट करने पर भी अपने यहां नौकर नहीं रक्खा। कार्नेगी को ऐसे युवकों से बड़ी घृणा थी जिनको स्वयं किसी

प्रकार की योग्यता नहीं होती थी, किन्तु फिर भी अपने उच्च-वंश के अभिमान में चूर रहते थे। कार्नेगी के कारखाने में जब कोई नया मनुष्य आता था तो कार्नेगी उसे अच्छी तरह समझा देता था कि यहा पर पद अथवा वेतन वृद्धि केवल तुम्हारे योग्यता परिश्रम तथा ईमानदारी से काम करने पर ही निर्भर है। किसी प्रकार की सिफारिशों से यहा काम नहीं चलेगा।

कार्नेगी में एक बड़ा गुण यह था कि वह तत्काल ही होनहार नवयुवकों को ताड़ लेता था। ऐसे नवयुवको का वह बड़ा मान करता था तथा उनको उन्नति करने का पूरा २ अवसर देता था। यही कारण है कि कार्नेगी ही के कारण बहुत से मनुष्य, जिनको पहिले कोई जानता भी न था, उन्नति-शिखर पर चढ़ गये। उदाहरणतः-मिस्टर ए० एच० फ़र्क जो व्यवसायिक संसार में आजकल प्रथम श्रेणी का मनुष्य है इस दशा को कार्नेगी ही के कारण पहुचा है। पहिले यह किसी और कारखाने मे साधारण सी जगह पर काम करता था। कार्नेगी ताड़ गया कि युवक होनहार है। उसको अपने कारख़ाने मे ले आया और एक अच्छी जगह देदी। एक और अमरीकन युवक था जो आरम्भमें डम्फर्मलाइन मे एक दुकान पर नौकर था। कार्नेगी ने इसको पिट्सबर्ग भेज कर उन्नति करने को अवसर दिया।

उस युवक ने इस अवसर से लाभ उठाया और होते २ कार्नेगी का हिस्सेदार बन गया। आजकल इस युवक की वार्षिक आय पचास हजार पौण्ड से अधिक है। इसी प्रकार कार्नेगी के दफ्तर मे श्वाब नाम का एक साधारण सा लड़का था। न इसके पास कुछ पूंजी थी न सहायता देने वाला कोई सम्बन्धी था। कार्नेगी ने ताड लिया कि लड़का तीक्ष्ण बुद्धि है। उसने उसे उन्नति करने का अवसर दिया। उन्नति करते २ यह लड़का कार्नेगी

ही के दफ्तर मे साधारण क्लर्क के पद से उच्च पद पर पहुच गया। आजकल वह लड़का न्यूसियेटल ट्रस्ट का, जो युनाइटेड स्टेट्स स्टील कारपोरेशन लिमिटेड् के नाम से प्रसिद्ध है, मैनेजर है। इस समय इसको दो लाख पौण्ड वार्षिक मिलता है। इस प्रकार के और भी बहुत से उदाहरण हैं जिनका विस्तार भय से यहां उल्लेख नही किया जा सकता।

नवां प्रकरण।

कार्नेगी का दान।

— Pope

They serve God well who serve his creatures.

—Mrs Norton

जहा धनपति होने की दृष्टि से कार्नेगी अपने समय का कुबेर है वहां दानी होने के विचार से अपने समय का कर्ण भी है। कार्नेगी लाखों पौण्ड दान मे देता रहता था। इस कारण उसके दिये दान की पूरी सूची बनाना कठिन है। हां! इतना कहा जा सकता है कि कार्नेगी ने जौलाई सन् १९१८ तक १०००००००००० रुपया दान कर दिया था।

कार्नेगी का विचार था कि धनवान होकर मरना पाप है। इसी कारण अपने धन से छुटकारा पाने के लिये वह उदारता पूर्वक

दान दिया करता था। ऐसा करने पर भी कार्नेगी अतुल सम्पत्ति छोड कर मरा। इस का कारण यह था कि इसकी आय भी अपरमित थी। सन् १९०३ ई० मे 'टिट्र बिट्स' नामक समाचार पत्र ने कार्नेगी की आय का हिसाब दिया था। वह हिसाब इस प्रकार था :—

सन् १९०० ई० में स्टील कम्पनी से लाभ:—४९००००० पौण्ड
दूसरी जगह लगाए हुये रुपये से लाभ ३००००० पौण्ड

कुल ५,२००००० पौण्ड

इस आमदनी के हिसाब से सन् १९०० ई० मे कार्नेगी की आमदनी ४३३३३३ पौण्ड प्रति मास या १००००० पौण्ड प्रति सप्ताह या १४२८६ पौण्ड दैनिक हुई। प्रति घण्टे की आमदनी ६०० पौण्ड के लगभग तथा प्रति मिनट की आमदनी एक पौण्ड के लगभग पड़ी।

कार्नेगी ने हम भारतवासियो के समान बिना सोचे विचारे अपना धन दान मे नही लुटाया था। कई बार सोच समझ कर कार्नेगी अपना रुपया दान मे दिया करता था। कार्नेगी ने अधिकतर धन निम्नलिखित बातो मे व्यय किया था —

१—अपने कारखाने के मजदूरो के लिये पैन्शन का प्रबन्ध करना।

२—पुस्तकालय तथा वाचनालय (Reading Room) खुलवाना।

३—विश्वविद्यालयों को सहायता देना तथा नये विश्वविद्यालय खुलवाना।

४—संसार मे शान्ति स्थापन का प्रयत्न करना।

५—गिरजो को सहायता देना।

[१] मजदूरों की पेन्शन का प्रबन्ध करना।

कार्नेगी को अपने मजदूरों का बड़ा ख्याल रहता था। वह कहा करता था कि मैं अपने मजदूरों की सहायता ही के कारण इतनी अतुल सम्पत्ति कमाने में समर्थ हुवा हूं। कार्नेगी अपनी इस सहानुभूति तथा कृतज्ञता का व्यवहारिक प्रमाण भी दिया करता था। अपना काम काज छोडते समय कार्नेगी ने ४८ लाख पौण्ड 'कार्नेगी स्टील कम्पनी' के मजदूरों के पेन्शन फण्ड में दिये थे। ८ लाख पौण्ड इससे पहिले दे चुका था। फण्ड से उन बूढे कारीगरों को जो वृद्धावस्था के कारण काम करने में असमर्थ हो जाते थे, सहायता दी जाती थी। कारखाने में काम करते समय किसी आकस्मिक दुर्घटना के कारण जख्मी हो जाने वाले मजदूरों या उसके घरवालों को भी इस फ़ण्ड से सहायता मिलती थी। सहायता उस समय तक दी जाती थी, जब तक कि सहायता पानेवालों के लड़के युवा होकर खाने कमाने के योग्य न होते थे।

[२] पुस्तकालय तथा वाचनालय।

पुस्तकालयों से कार्नेगी को बडा प्रेम था। वह कहा करता था कि अज्ञानान्धकार को दूर करने में जितनी सहायता पुस्तकालयों से मिलती है, किसी और चीज़ से नहीं मिलती। कार्नेगी द्वारा खुलवाये हुवे पुस्तकालयों की ठीक २ संख्या बताना असम्भव है। यहां तो पाठकों के दिग्दर्शनार्थ इस सम्बन्ध में कार्नेगी द्वारा दिये हुवे दो चार दानों ही का उल्लेख किया जाता है।

सब से पहिला पुस्तकालय उसने ब्रैडक में खुलवाया था। ब्रैडक की जनसंख्या २० हजार के लगभग है। यहां के अधिकतर

निवासी कार्नेगी की कम्पनी मे काम करते थे। यह पुस्तकालय कार्नेगी ने विशेषतया अपने कारीगरो के लाभ के लिये ही बनवाया था। इस पुस्तकालय के साथ एक बड़ा हाल, एक व्यायाम करने का स्थान तथा बिलियर्ड खेलने का कमरा भी था। इसके पश्चात् ब्रैडक के पास ही एलीघेनी नामक शहर मे साढ़े सात हजार पौण्ड लगा कर एक पुस्तकालय खुलवाया। इस पुस्तकालय की अलमारियो मे सात लाख पुस्तके आ सकती थी। खुलने से चार वर्ष बाद इस पुस्तकालय मे १२५००० पुस्तके थी, वर्ष भर मे पाठको ने १६०००० मासिक पत्र पढे थे। कार्नेगी ने तीन हजार पौण्ड इस पुस्तकालय के वार्षिक व्यय के लिये भी देना स्वीकार कर लिया था। इस पुस्तकालय के खम्भो का बुनियादी पत्थर प्रैसीडैण्ट हैरिस ने १३ फरवरी सन् १८९० ई० को रक्खा था।

कार्नेगी ने पिट्सबर्ग को २२०००० पौण्ड इस शर्त पर देना चाहे थे कि इस रुपये से फ्री पुस्तकालय खोले जायें, किन्तु साथ ही साथ इन पुस्तकालयो के वार्षिक व्यय के लिये शहर की कौन्सल भी ८००० पौण्ड वार्षिक देने स्वीकार करे। इन पुस्तकालयो का प्रबन्ध एक प्रबन्धकारिणी सभा के आधीन रहे जिस के आधे सभासद मैं चुनू तथा आधे सभासद शहर की कौन्सल चुने। आरम्भ मे तो इन शर्तो पर दान लेने से कौन्सल ने इन्कार कर दिया। किन्तु बाद मे कौन्सल ने अनुभव किया कि दान को स्वीकार न करना नितान्त मूर्खता थी। कौन्सल ने कार्नेगी से दान के लिये फिर स्वय प्रार्थना की। कार्नेगी ने कौन्सल की प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार कर लिया तथा सहर्ष २२०००० पौण्ड फ्री-पुस्तकालयो के लिये दे दिये। सन् १८९६ ई० मे यह सस्था खुल गई। इस सस्था का खाकी पत्थर का बड़ा विशाल भवन

है। यहां पर ढेढ लाख पुस्तकें रखने का प्रबन्ध है। इस भवन के एक भाग में गाने का कमरा भी है। यहां २१०० मनुष्य सुगमता से बैठ सकते हैं। ६० गायक तथा २०० बाजक आसानी से स्टेज पर गा बजा सकते हैं। यहां पर एक बहुत विशाल पाइप आरगन भी लगा हुआ है जिस से प्रति सप्ताह गाना सुनाया जाता है।

इस भवन के एक दूसरे भाग में अजायब घर है। एक ओर एक बहुत बड़ा हाल है जिस में बहुत से कमरे हैं। ये कमरे धुरन्धर विज्ञान-वेत्ताओं के वादविवाद तथा वक्तृताओं के लिये बनाये गये हैं। इन के अतिरिक्त विद्यार्थियों को शिल्प वाणिज्य की शिक्षा देने के लिये भी बहुत से कमरे हैं।

इस संस्था की सात शाखायें हैं जहां से आस पास के शहरों में पढ़ने के लिये पुस्तकें भेजी जाती हैं। इस संस्था ने शहर वालों के जीवन में एक प्रकार का नया जीवन फूक दिया है।

सन् १८६० ई० में कार्नेगी ने डम्फर्मलाइन में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय खुलवाया।

इसके बाद १६०१ ई० में दस लाख ४० हज़ार पौण्ड से न्यूयार्क में पसठ पुस्तकालय खुलवाये। दो लाख पौण्ड से सेन्ट लुई में पुस्तकालय खुलवाये।

तत्पश्चात् संयुक्त प्रदेश में ६६ पुस्तकालय खुलवाये। १८ पुस्तकालय अपनी मातृभूमि में खुलवाये। कार्नेगी के दान से विशेष लाभ अमरीका के निम्नलिखित शहरों को पहुंचा था.—

न्यूयार्क.' पिट्सबर्ग, सैन्ट लुई, एली घैनी, ब्रेडक, वाशिंगटन तथा सैन फ्रान्सिस्को।

अपनी मातृ-भूमि स्काटलैण्ड में भी कार्नेगी ने अनेक पुस्त-कालय खुलवाये। सन् १६०१ ई० में एक वर्ष में ही कार्नेगी ने अमरीका में पुस्तकालयो के लिये २५ लाख पौण्ड दान दिया।

इस के पश्चात् कार्नेगी मरते समय तक पुस्तकालयो के लिये जी खोल कर दान देता रहा। कार्नेगी द्वारा खुलवाये हुवे पुस्तकालयो की ठीक ठीक संख्या बताना असंभव है।

[३] विश्वविद्यालय।

कार्नेगी बड़ा विद्या-प्रेमी था। जीवन भर उसका उद्देश्य यही रहा कि जहां तक हो सके अविद्यान्धकार दूर किया जाय। इसी लिये दिल खोल कर पुस्तकालयो के लिये दान दिया तथा अत्यन्त उदारता पूर्वक विश्वविद्यालयो को सहायता दी तथा नये विश्वविद्यालय खुलवाये।

सन् १८९९ ई० मे कार्नेगी ने अपनी जन्मभूमि डम्फर्मलाइन मे विद्यालय खुलवाया। इस विद्यालय मे इञ्जीनियरी तथा कान खोदने का काम सिखाया जाता है। ५० हज़ार पौण्ड कार्नेगी ने बरमिंघम विश्वविद्यालय को वहां के चान्सलर राइट आनरेबिल जोज़फ़-चैम्बरलेन एम्० पी० की मारफ़त दान दिये। कार्नेगी ने बरमिन्घम विश्वविद्यालय को यह दान शिल्प वाणिज्य की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिये दिया था।

सन् १८९९ ई० में प्रसिद्ध मासिकपत्र 'नाइन्टीन्थ सैञ्चुरी' में टामस शा का विश्वविद्यालयों मे शुल्कहीन शिक्षा पर एक लेख प्रकाशित हुवा। टामस शामा डम्फर्म लाइन का रहने वाला था। यह नानबाई का लडका था, किन्तु अपनी योग्यता के कारण स्काटलैण्ड का सालिस्टर जनरल तथा पार्लियामेंट का सभासद् होगया था। कार्नेगी को टामस के विचार पसन्द आये और उस ने १९०१ ई० मे टामस के विचारो को कार्यरूप मे परिणत करने के लिये २० लाख पौण्ड दान दिये।

इस दान का प्रबन्ध इस प्रकार किया था। उस समय कार्नेगी की अमरीका की "स्टील कम्पनी" की पूञ्जी एक करोड़ डालर अर्थात् २० लाख पौण्ड थी। पांच फ़ी सदी वार्षिक का लाभ होता था। इस हिसाब से इस कारखाने से एक लाख पौण्ड वार्षिक की आय होती थी। इस वार्षिक आय को स्काट-लैण्ड में शिक्षा प्रचार के निमित्त खर्च करने के लिये कार्नेगी ने इस कारखाने को कुछ ट्रस्टियों के हाथ में देकर नौ सज्जनों की एक प्रबन्धकारिणी सभा बना दी। इस प्रबन्धकारिणी सभा में स्काटलैण्ड के प्रसिद्ध२ पुरुष थे। नौ सभासदों में से दो सभासद "यूनिवर्सिटी कोर्ट" द्वारा चुने जाते थे। पहिले दो साल में एडिन्बरा तथा एबर्डीन के सभासद काम करते थे तथा दूसरे दो साल में ग्लासगो तथा सैन्ट एन्ड्रूज के। इस प्रबन्धकारिणी सभा को अधिकार था कि स्काटलैण्ड में उच्च शिक्षा को सुलभ करने के लिये कारखाने की वार्षिक आय को जिस प्रकार उचित समझे व्यय करे।

कार्नेगी ने अपने दान-पत्र में लिखा था कि वार्षिक आय का अर्द्ध भाग स्काटलैण्ड के विश्वविद्यालयों की उन्नति तथा प्रसार में व्यय किया जाय। विज्ञान तथा आयुर्वेद शास्त्र की ओर विशेष ध्यान रक्खा जाय। छात्रों को वैज्ञानिक अन्वेषण करने में सहायता दी जाय। इतिहास, अर्थशास्त्र, अंगरेजी साहित्य तथा अन्य आधुनिक भाषाओं की शिक्षा का भी सुप्रबन्ध किया जाय। शिल्प, वाणिज्य, व्यवसाय सम्बन्धी अन्य विषयों की शिक्षा का भी प्रबन्ध कराया जाय। अजायब घर तथा प्रयोग शालायें (Laboratories) बनवाई जायें। औजारों की दृष्टि से प्रयोग शालायें अप टु-डेट (up-to-date) रहें। छात्रों को उपरोक्त विषयों में अन्वेषण (Research) करने के लिये वज़ीफ़े भी दिये जायें।

आय के शेष आधे भाग से या आवश्यकतानुसार आधी आय के कुछ अंश से असमर्थ छात्रों की फ़ीस या फ़ीस का कुछ भाग दिया जाय । इस प्रकार की सहायता के अधिकारी वे ही छात्र हो सकते हैं जो स्काच जाति के हों या जो चौदह वर्ष की आयु के वाद स्काटलैण्ड के किसी सहायता प्राप्त (Aided School) स्कूल मे कम से कम दो वर्ष पढ़े हो ।

इस प्रकार की सहायता पाने की इच्छा रखने वाले छात्रों को प्रवन्धकारिणी सभा द्वारा निर्दिष्ट फ़ार्मो पर प्रार्थना-पत्र भेजना होता है । सहायता उन्ही छात्रो को दी जाती है जो असमर्थ होने के साथ साथ होनहार भी होते हैं । यदि कोई लडका असाधारण योग्यता का परिचय देता है तो उसको फीस के अतिरिक्त और अधिक सहायता भी दे दी जाती है। इसी प्रकार यदि कोई सहायता पाने वाला छात्र वदचलन हो जाता है या कालिज की साधारण परीक्षाओं में फ़ेल हो जाता है तो प्रवन्धकारिणी सभा ऐसे छात्र की फ़ीस देना वन्द कर देती है ।

सहायता लेने वाले छात्रो से इस वात का वचन लिया जाता है कि वे समर्थ होने पर सहायता-रूप से मिला हुआ रुपया वापिस करने का प्रयत्न करेंगे जिससे भविष्य मे और अधिक छात्रों को सहायता दी जा सके। सहायता पानेवाले छात्रो की सम्मान-रक्षा का पूरा ध्यान रक्खा जाता है । सारी काररवाइयां गुप्त रहती हैं। किसी छात्र को इस बात का पता नहीं रहता कि किस २ छात्र को कार्नेगी के फ़ण्ड से सहायता मिल रही है ।

कार्नेगी ने उक्त दान पत्र ७ जून सन १९०१ ई० को लिखा था । कार्नेगी ने ट्रस्टियो को इस वात का भी पूरा २ अधिकार दे दिया था कि वे समय-परिवर्त्तन के अनुसार यदि चाहें तो दो तिहाई सभासदों की सम्मति से उपरोक्त शर्तों मे हेर फेर भी कर सकते है ।

कार्नेगी के इस शर्तनामे के प्रत्येक शब्द से कार्नेगी की विद्वत्ता, दूरदर्शिता तथा उसके विद्याप्रेम का पता चलता है। कार्नेगी के इस दान के कारण सहस्रों स्काच विद्यार्थी, जो असमर्थता के कारण सारी आयु अविद्यान्धकार में पड़े रहते, अब विद्याध्ययन कर रहे हैं।

इस दान-पत्र से पहिले भी कार्नेगी असमर्थ छात्रों की सहायता करता रहता था। उसे उस समय बड़ा हर्ष होता था, जब उससे सहायता पानेवाला कोई छात्र कृतकार्य होकर सहायता-रूप में पाये हुवे रुपये को लौटाता था। ऐसे समय कार्नेगी के हार्दिक विचार क्या होते थे--इस बात को बताने के लिये हम यहां पर इस प्रकार की सहायता पानेवाले एक छात्र के नाम लिखे हुए कार्नेगी के एक पत्र का अनुवाद देना चाहते हैं:—

५,१५ पैसटस्ट्रीट, न्यूयार्क,
११ फ़रवरी, १९०२ ई०।

मेरे प्रिय मिस्टर,

मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ हूं क्योंकि तुमने मुझे मेरे जीवन में बड़ा आनन्द पहुंचाया है। तुमने मिस्टर एम्० कामर्क मन्त्री 'कार्नेगी ट्रस्ट' को लिखा है कि तुम ग्लासगो विश्वविद्यालय के फ़ैलो बन जाने पर ग्यारह पौण्ड ग्यारह शिलिङ्ग, जो तुमने विद्याध्ययन के समय लिये थे, लौटा रहे हो। तुमने यह भी लिखा है कि तुम अब तक इस सहायता-प्राप्ति के लिये कृतज्ञ हो।

जब मैंने अपनी चिट्ठी में वह वाक्य लिखा था, जिसके अनुसार दरिद्रों को सहायता रूप में दिये हुवे रुपये को वापिस लेने का अधिकार दिया गया है तो मैं अपने निज के तजुरबे से जानता था कि वे युवक, जिनको मैं ने शिक्षा-प्राप्ति या कारबार आरंभ करने में सहायता दी है, अवश्य इस सद्-व्यवहार को याद

रक्खेंगे। स्काटलैण्ड मे जो सहायता छात्रो को दी जाती है उसे मुफ्त न समझना चाहिये। वह पेशगी दिया हुवा रुपया है जिसका वापिस होना अनिवार्य है। जैसा कि मैंने अपनी चिट्ठी मे लिखा है, इस प्रबंध से स्काटलैण्ड के युवकों में स्वाधीनता का भाव पैदा होजायगा। मै तुमको इस कारण बधाई देता हूं कि तुम ही इस शुभ प्रथा के आरम्भ करने वाले हो। जब तक मैं तुमसे हाथ न मिलाऊं मेरी हार्दिक इच्छा पूरी नहीं हो सकती। मुझे तुम्हारे 'फैलो' हो जाने से बड़ा हर्ष हुवा है। मुझे इस बात का बड़ा गर्व है कि तुम मेरे देश-बन्धु हो।

तुम्हारा सच्चा शुभचिन्तक और प्रेमी,

एन्ड्रू कार्नेगी।

देखा पाठक आपने! कार्नेगी के कैसे उदार विचार थे! कार्नेगी हमारे आज कल के रईस कहलानेवालों के समान नहीं था जो कभी किसी का थोडा सा भी उपकार कर देते हैं तो उसको नीच दृष्टि से देखने लगते हैं और इस बात की आशा रखते हैं कि वह सारी आयु हमारा कृतज्ञ रहे।

कार्नेगी ने अमरीका और ब्रिटिश आइल्स के असंख्य असमर्थ छात्रों की सहायता की तथा अनेक विश्वविद्यालयो को बड़े २ दान दिये। इन सब दानों की पूरी २ सूची देना असम्भव है। कार्नेगी को अमरीका तथा स्काटलैण्ड दोनो से अतुल प्रेम था। अमरीका मे उसने अपने जीवन का अधिकाश भाग व्यतीत किया था तथा अतुल सम्पत्ति कमाई थी। स्काटलैण्ड उसकी जन्मभूमि थी। इस कारण कार्नेगी ने अधिकतर दान इन्ही दोनों देशों को दिया था।

कार्नेगी के विश्वविद्यालय सम्बन्धी अनगिनत दानों के विषय में इस छोटी सी पुस्तक में अधिक नहीं लिखा जा सकता। यहां तो केवल दिग्दर्शन मात्र करा दिया गया है। किन्तु इस विषय को समाप्त करने के पूर्व पिट्सबर्ग के 'कार्नेगी शिल्प विद्यालय' का वृत्तान्त देना अत्यन्तावश्यक है क्योंकि अमरीका की आधुनिक उन्नति का कारण ऐसे २ शिल्प विद्यालय ही हैं तथा भारत वर्ष में भी ऐसे शिल्प विद्यालयों की बड़ी आवश्यकता है। हमारे यहां के एन्ट्रेंस पास विद्यार्थी भी अमरीका जाकर इस शिल्प-विद्यालय से लाभ उठा सकते हैं। इस कारण इस शिल्प-विद्यालय के विषय में विस्तृत रूप से लिखना आवश्यक है। स्वामी सत्यदेव जी ने अमरीका जाकर अपनी आंखों से उस शिल्प विद्यालय को देखा था और उसका वृत्तान्त हिन्दी की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित कराया था। वही वृत्तान्त 'सरस्वती' से यहां उद्धृत किया जाता है.—

इस विद्यालय के लिये आपने (कार्नेगी ने) सत्तर लाख डालर दे दिये हैं। एक डालर तीन रुपये का होता है। इस हिसाब से आपने दो करोड़ दस लाख रुपये खर्च करके यह शिल्प विद्यालय खोला है।

कार्नेगी शिल्प विद्यालय तीन भागों मे विभक्त है—ललितकला, अजायब घर और कलाभवन। छ. एकड़ भूमि में इस की इमारतें हैं। विद्यार्थियों की ज़रूरतों को पूरा करने का यहां सब सामान है।

इमारतों का हाल सुनिये.—

पहले कार्नेगी-पुस्तकालय को लीजिये। पुस्तकालय क्या है शाही महल है। इस इमारत को देखकर हम दंग रह गये। व्यसन हो तो ऐसा हो। इस सङ्गमरमर के विशाल-भवन मे विद्या-प्रेमियों

के लिये चुन२ कर पुस्तके रक्खी गई हैं, जिनकी सख्या तीन लाख पचास हज़ार के क़रीब है। इनमे ३५,००० पुस्तकें वैज्ञानिक और यन्त्र-विद्या सम्बन्धी हैं, जो एक से एक बढ़कर हैं। तीन सौ के क़रीब पत्रिकाएं यहा आती हैं, जिनको पढ़कर विद्या-व्यसनी जन अलौकिक आनन्द प्राप्त करते हैं। इतने ही और साप्ताहिक पत्र भी इस पुस्तकालय की शोभा बढ़ाते हैं। पुस्तकालय का यह विभाग विद्वान् वैज्ञानिक लोगो की सरक्षकता में है जिनसे हर प्रकार को सूचनाये मुफ्त मिलती हैं।

और तमाशा देखिये। इस पुस्तकालय की एक सौ बीस शाखाएं पिट्सबर्ग नगर मे हैं। नगर के हाईस्कूलो के छात्र, कन्याओ के समाज, तथा मजदूरों की सोसाइटिया इन शाखाओ के द्वारा इस बृहत्पुस्तकालय से पूरा २ लाभ उठा सकती हैं। जो किताब जिसको चाहिये वह अपने शाखा विभाग के पुस्तकाध्यक्ष से कह देता हैं। वह उसकी खबर बड़े पुस्तकालय में कर देता है। दूसरे दिन किताब वहां पहुच जाती है। यह सब मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

देखा आपने! ऐसे तरीकों से विद्या-प्रचार हुआ करता है। बातों से काम नही निकला करते।

अब अजायब घर की बात सुनिये। यह अजायवघर अमरीका के चार बड़े २ अजायब घरो मे से एक है। इसमे पन्द्रह लाख छोटी बड़ी दर्शनीय चीजें रक्खी हैं। यह संग्रह बहुत सा धन खर्च करके बड़े परिश्रम से किया गया है। इस में खनिज, जड़ी बूटी और कीट-विद्या सम्बन्धी नमूने बडे काम के हैं। पुरातत्त्व और नरवंश-विद्या-सम्बन्धी सग्रह भी अपने ढंग का इसमें एक ही है।

ललितकला वाला विभाग और भी बढ़िया है। धनिक कार्नेगी ने चुन २ कर कुशल-चित्रकारो के तैल-चित्र यहां रक्खे हैं।

अमरीका तथा योरप के चित्रकारों का सर्वोत्तम कौशल यहां देखने में आता है। जो विद्यार्थी इस कला में प्रवीण होने के लिये विद्यालय में भरती होते हैं वे घण्टों उन चित्रों के सामने बैठकर अभ्यास करते हैं।

इस विभाग की ओर से सार्वभौमिक (भारत को छोड़कर !) प्रदर्शनियां होती हैं, जिनमें सबसे अधिक कुशल चित्रकार को पुरस्कार दिया जाता है। इससे चित्रकारों का उत्साह बढ़ता है। वे दिन दूनी रात चौगुनी मेहनत करके अपने अभ्यासको बढ़ाते हैं।

साथ ही सङ्गतराशी और भवन-निर्माण विषयक कमरे भी इसमें हैं, जहां इन कलाओं के उस्तादों की कारीगरी के नमूने रक्खे हुवे हैं। विद्यार्थी लोग यहां भी आकर अभ्यास करते हैं। बड़ी २ इमारतों के यहां नमूने हैं। उन को देख कर विद्यार्थी वैसा ही या उस से बढ़कर काम बनाने का उद्योग करते हैं। इस के अतिरिक्त उस विभाग में सङ्गीत का भी प्रबन्ध है। एक बड़ा कमरा इस के लिये है। शनि और रविवार को यहां विज्ञानाचार्यों की धूम रहती है। व्याख्यान आदि भी यहां होते हैं।

कला भवन सम्बंधी चार स्कूल हैं, जिन में दिन को और रात को भी पढ़ाई होती है। जो दिन में आ सकते हैं वे दिन में पढ़ते हैं। जो रात को आसकते हैं उन के लिये रात का प्रबन्ध है। विद्यार्थी जो कुछ सीखना चाहता है उस के समय के अनुसार तदर्थ सब प्रबन्ध कर दिया जाता है।

पहले स्कूल में विद्युत, रसायन, वाणिज्य, धातु, यंत्र, खनिज-पदार्थ तथा आरोग्य सम्बन्धी विद्याएं सिखाई जाती हैं।

दूसरे स्कूल में सब काम हाथ से करना सिखाया जाता है, जिस से विद्यार्थी कल-पुर्जों को खोल सकें; यदि कुछ टूट जाय तो

उसको फौरन बना सकें। कलो की भीतरी और बाहरी सब बातें समझ जाये, पुरजों को जोड देने मे कुशल होजायें। यहां पर ऐसे लोग भी भरती किये जाते हैं जो वाणिज्य-विद्यालयों मे अध्यापको का काम करना चाहते हों।

तीसरे स्कूल मे मकान बनाने और उनको सजाने आदि का काम सिखाया जाता है। इस स्कूल के लिये एक बड़ी भारी इमारत तैयार हो रही है। उसके बनने पर और बहुत बातो का सुभीता हो जायगा।

चौथे स्कूल मे स्त्रियो की शिक्षा का प्रबन्ध है। उनको गृहस्थ सम्बन्धी कार्यों की शिक्षा यहा दी जाती है। सीना, पिरोना, भोजन बनाना, गाना, मकान सजाना तथा साहित्य विज्ञान, आदि सभी आवश्यक बाते यहा सिखाई जाती हैं। यह चौथा स्कूल विद्या-प्रेमी कार्नेगी ने अपनी माता की यादगार मे खोला है। अपनी माता से किस को स्नेह नही होता? परन्तु बहुत थोडे ऐसे हैं जो उस स्नेह को अमर करने के लिये कोई चिरस्थायी यादगार बनाते हो।

जिन्हे इस विद्यालय के विषय मे अधिक जानना हो वे नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार करें:—

The Registrar,
Carnegie Technichal Schools,
Pittsburg Pa, U S. A

वे यहां से विद्यालय का विवरण-पत्र भी मगा सकते हैं।

इस स्कूल मे दाखिल होने वाले की उम्र कम से कम सोलह वर्ष की होनी चाहिये। जो रात को आकर पढ़ना चाहें उनकी उम्र अठारह वर्ष से कम न होनी चाहिये। फ़ीस सात रुपये सालाना दिन के विद्यार्थियो से और पन्द्रह रुपये सालाना रात के छात्रों से ली जाती है। यह फ़ीस पिट्सबर्ग मे रहने वाले विद्यार्थियों

के लिये है। दूसरे छात्रों से नव्वे रुपये सालाना दिन वाले और इक्कीस रुपये रात वाले विद्यार्थियों से ली जाती है।

भारतवर्ष के स्कूलों से एन्ट्रेन्स पास विद्यार्थी सहज ही में यहां भरती हो सकते हैं। जो विद्यार्थी एक साल का खर्च एक हज़ार रुपया यहा लेकर पहुंचे वह सहज ही में बाक़ी साल काम करके पढ़ सकता है। पर विद्यार्थी चतुर, तीक्ष्ण बुद्धि और मधुरभाषी हो तो। पिट्सबर्ग में वेदान्त की एक सोसाइटी भी है जो हिन्दू छात्रों की सहायता करने में हर प्रकार उद्यत रहती है। स्वामी बोधानन्द जी बड़े देशभक्त हैं और अपनी शक्ति के अनुसार विद्यार्थियों की सहायता करते हैं। यदि किसी को उन से पत्र-व्यवहार करना हो तो नीचे लिखे पते पर कर सकता है:—

Swami Bodhanand ji
3610 5th Ace..
Pittesburg, Pa , U S A.

ईश्वर करे भारतवर्ष में भी एक ऐसा ही विद्यालय खुले जिस में ऊंच नीच सभी जाति के बालक पढ़ें। हानिकारक बन्धनों की गाठ कटे और देश के बच्चे कला-कौशलों में कुशल हो कर भारत की निर्धनता दूर करें।

धार्मिक संस्थायें।

कार्नेगी ने धार्मिक संस्थाओं को बहुत कम दान दिया था। यद्यपि वह नास्तिक नहीं था, किन्तु उसका विचार था कि ऐसे कामों मे दान देना चाहिये जिनसे सर्वसाधारण लाभ उठा सकें। वह अपने आपको मनुष्य मात्र का हितैषी समझता था। उसने कोई गिरजा नहीं बनवाया। उसे गायन विद्या से बड़ा प्रेम था।

इस कारण उसने बहुत से गिरजाओ को अरगन बाजे भेंट किये थे। एक बार उस ने कहा था:—" सैवथ अर्थात् रविवार को अरगन की आवाज़ से जो प्रभाव पडता है मै उसका उत्तरदायी हूं। मञ्च (प्लेट फ़ार्म) के ऊपर से आने वाली आवाज़ से मुझे मतलब नही है। "

कार्नेगी के विचार

दसवां प्रकरण।

कार्नेगी के राजनैतिक विचार।

Some have said that it is not the business of private men to meddle with government—a bold and dishonest saying, which is fit to come out from no mouth but that of a tyrant or a slave.

—Cato.

र्नेगी प्रजा-तन्त्र शासन का पोषक था। वंशानुगत अधिकारों से उसको बड़ी घृणा थी। उसका कहना था कि संसार की अधिकतर अशान्ति राजवंश रूपी वृक्ष ही के कारण फैली हुई है। कार्नेगी के विचार बचपन ही से प्रजातन्त्र की ओर झुके हुवे थे। इन विचारों का मूल कारण उस का चचा था। उसका चचा चार्टिस्ट * था तथा सर्वसाधारण

---

* जो लोग 'पीपिल्स चार्टर' के समर्थक थे वे 'चार्टिस्ट' कहलाते थे। इस चार्टर में इस प्रकार की शर्तें थीं :—

पार्लमेन्ट मिम्बरों में सर्वसाधारण की सम्मति ली जाय, पार्लियामेन्ट का चुनाव प्रतिवर्ष हो, इत्यादि २।

मे स्वतन्त्रता पूर्वक सरकार के अन्यायपूर्ण कार्यो की क़लई खोला करता था। स्पष्टवक्ता होने के अपराध ही में गवर्नमेंण्ट ने उस को वन्दीगृह मे भेज दिया था। इस घटना का वर्णन करते हुवे कार्नेगी ने एक बार कहा था:—"आज तक जब मैं किसी नृप या वशानुगत अधिकारो का वर्णन करता हू, तो मेरे खून मे जोश पैदा हो कर मेरा चेहरा लाल हो जाता है। कभी २ मेरे दिल मे ऐसा भी विचार आया है कि यदि सब वशक्रमानुगत नृपो को एक २ करके मार भी डाला जाय तो भी कुछ अनुचित न होगा। वशानुगत अधिकार से मुझे बड़ी घृणा है। सात वर्ष की आयु ही से मेरा ऐसा विचार है।"

कार्नेगी ने अपनी पुस्तक "सफल प्रजातन्त्र शासन" मे इस विषय पर अपने विचार विस्तृत-रूप से प्रगट किये हैं। इस पुस्तक मे एक स्थान पर कार्नेगी ने निरकुश शासको को सम्बोधन करते हुवे लिखा है:—'अय योरप के निरंकुश शासको! क्या तुम नही जानते हो कि वंश सम्बन्धी सम्मान के शोक का नक्कारा वज रहा है। क्या तुम ऐसे वहरे हो कि गर्ज की आवाज़ नही सुनते। ऐसे अन्धे हो कि उस बिजली को नही देखते जो थोड़ी २ देर मे चमक कर उस तूफ़ान के आगमन की सूचना दे रही है जो प्रजातन्त्र शासन से पहिले उठने वाला है।"

कार्नेगी को अमरीका पर वड़ा गर्व था। किन्तु कार्नेगी का गर्व इस कारण नही था कि अमरीका वड़ा धनी देश है। कार्नेगी को अमरीका पर इस कारण गर्व था कि वहां पर सैनिक प्रभुत्व का बिलकुल अभाव है तथा प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार हैं। वहां पर एक निर्धन के वालक को भी भविष्य में अमरीका का प्रैसीडैन्ट बन जाने का उतना ही अवसर है जितना कि एक करोड़-पति के वालक को है।

कार्नेगी इङ्गलैण्ड के मज़दूर पक्ष के स्वतन्त्र विचार वाले मेम्बरों की बड़ी प्रशंसा किया करता था। जान मारले, ग्लैडस्टन तथा चैम्बरलेन को तो बहुत ही अधिक मान की दृष्टि से देखता था।

कार्नेगी के प्रजातन्त्र-विषयक विचार विस्तृत-रूप से जानने के लिये कार्नेगी की 'सफल प्रजातन्त्र शासन' नामक पुस्तक को पढ़ना चाहिये। सन् १८८५ ई० में कार्नेगी ने बरमिंघम के पुस्त-कालय को संयुक्तप्रदेश अमरीका की एटलस की दो प्रतियां भेंट की थीं। इन दोनों एटलसों के आरम्भ में कोरे पृष्ठों पर कार्नेगी ने तीन चार पंक्तियें लिख दी थीं। इन पंक्तियों के पढ़ने से पता चलता है कि कार्नेगी प्रजातन्त्र शासक का कितना प्रेमी था। पहिली एटलस के आरम्भ के पृष्ठ पर लिखा था —

यह पुस्तक बरमिंघम पुस्तकालय को कार्नेगी भेंट करता है।

न्यूपोर्ट,

२६ जून १८८५ ई० ।

बरमिन्घम के निवासी विचार करें कि उनके सम्बन्धी समुद्र पार प्रजातन्त्र शासन में, जहां पर सब नागरिकों को एक समान समझना आवश्यक है तथा जहां पर नृपों तथा धन-वानों के शासन का कोई नाम तक नहीं जानता है, क्या कर रहे हैं।

ह० एन्ड्रू कार्नेगी।

दूसरी एटलस पर लिखा था:—

सर्वसाधारण के नेता तथा इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री जोज़फ़ चेम्बरलेन की सेवा में मैं उस प्रजा-तन्त्र शासन की, जिस का शासन समान नागरिक अधिकार के एक मात्र सिद्धान्त पर स्थित है, यह छपी हुई दस्तावेज़ भेजता हूं।

न्यूयार्क
१८ नवम्बर सन् १८८५ ई०   ह० एण्ड्रू कार्नेगी।

इंग्लैण्ड की राजनैतिक स्थिति।

कार्नेगी इंग्लैण्ड की राजनैतिक स्थिनि का विशेष ध्यान से मनन किया करता था। हाउस आव् लार्डस् को वह बिलकुल ही निरुपयोगी सभा समझता था। उसका विचार था कि हाउस आव् लार्डस् के अधिकतर सभासद् आलसी हैं तथा सर्वथा अयोग्य हैं। इंग्लैण्ड वालों से उसको इस वात की भी शिकायत थी कि वे स्वभाव से लकीर के फकीर हैं तथा किसी भले सुधार की आवश्यकता वडी देर मे समझते हैं। उसका कहना था कि इङ्गलैण्ड वाले छोटा ग्रास तो चबा जाते है किन्तु बड़ा ग्रास नहीं निगल सकते। इन सव दोषो के होते हुवे भी कार्नेगी हाउस आव् कामन्स से सन्तुष्ट था। उसका विचार था कि इस सभा के अधिकतर सभासद् देश के शुभचिन्तक तथा योग्य हैं।

ख़िताब।

कार्नेगी ख़िताबों के बहुत विरुद्ध था। उसका विचार था कि ख़िताबों से किसी प्रकार का लाभ नहीं है उल्टी हानि ही है। ख़िताबों से समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भ्रातृ भाव का लोप होने लगता है तथा झूंटे गर्व का भूत सवार हो जाता है। किसी मनुष्य का सब से बड़ा ख़िताब उस का नाम है।

साम्यवाद।

कार्नेगी का विचार था कि प्रजा का शासन प्रजा द्वारा ही प्रजा के भले के लिये होना चाहिये। किन्तु वह साम्यवादी नहीं था। उसका कहना था कि साम्यवाद के सिद्धान्त कार्यरूप में पूर्ण-रूप से परिणत नही किये जा सकते। साम्यवादी चाहते हैं कि हम एक बार कूद कर चान्द तक पहुंच जायें।

आयर्लैण्ड की समस्या।

जैसा कि अभी लिखा जाचुका है कार्नेगी ग्लैडस्टन तथा मार्ले को बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखता था, किन्तु वह उनकी आयर्लैण्ड विषयक क्रूर-नीति का पोषक नहीं था। वह चाहता था कि आयर्लैण्ड को साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य दे दिया जाय तथा ब्रिटिश साम्राज्य मे आयर्लैण्ड का वही स्थान रहे जो अमरीका की प्रत्येक रियासत का संयुक्तप्रदेश अमरीका मे है।

युद्ध।

कार्नेगी शान्तिवादी था। युद्ध से उसे बड़ी घृणा थी। सन् १८८१ ई० मे उसने कहा था---"अमरीका के लिये सबसे बड़ी बात यह है कि उसके पास कोई ऐसी सेना नहीं है जिसे सेना कहा जाय। उसे बढ़िया २ जहाज़ रखने का भी गर्व प्राप्त नहीं है। है भी ठीक। अमरीका को युद्धप्रिय जगली जातियों के अनुसरण करने की क्या आवश्यकता है।"

दक्षिणीय अफ्रीका में योरोपीय जातियों की धींगा-मुस्ती के भी कार्नेगी बड़ा विरुद्ध था। वह फ्लीपाइन द्वीपों को पूर्ण स्वतन्त्रता दे देने का भी बडा पक्षपाती था।

अमरीका की फ़िलीपाइन द्वीप सम्बन्धी नीति (Policy) उसे पसन्द नहीं थी। इस विषय में उसने बहुत से लेख समाचार पत्रों में लिखे थे जिनमें उसने सरकार के कार्यों की कड़ी आलो-चना की थी।

उसको योरोपीय जातियों का यह कहना--कि हम अफ्रीका में वहां के असभ्य निवासियों को सदाचार तथा सभ्यता सिखाने जाते हैं---निरा ढोंग मालूम पडता था। उसका कहना था कि हब्शियों को स्वयं ही सभ्यता प्राप्त करने के लिये छोड़ देना चाहिये।

ससार से युद्ध उठाने के लिये वह अमरीका तथा ब्रिटिश आइल्स का परस्पर मेल बडा आवश्यक समझता था । उसका विचार था कि यदि ये दोनों देश मिल कर चाहेंगे तो अन्य जातियों को अन्याय करने से रोक सकेंगे । गत महायुद्ध के इतिहास ने बता दिया है कि कार्नेगी की कल्पना कैसी निर्मूल थी। कार्नेगी स्वयं प्रजातन्त्र के रंग मे ऐसा डूबा हुवा था कि वह मनुष्य स्वभाव को ठीक २ नही समझ सकता था। मनुष्य जाति के आरम्भ से लूट-खसोट का बाजार गर्म रहा है। मनुष्य जाति का इतिहास खून के धब्बो से रंगा हुआ है । बलवान् मनुष्य निर्बलो पर अत्याचार करते आये हैं तथा बलवान् जातिया निर्बल जातियों को हड़प करती आई हैं। भूत काल में भी ऐसा हुवा था और अब भी ऐसा ही हो रहा है। केवल इतना भेद पड़ गया है कि आधुनिक समय मे मक्कारी अधिक बढ़ गई है। यद्यपि हमारा विचार यह नही है कि भविष्य में इसी प्रकार अत्याचार का युग रहेगा, किन्तु इतना अवश्य है कि संसार से अत्याचार जाने तथा स्वर्णयुग आने मे बहुत अधिक समय की देरी है।

कार्नेगी का विचार था कि अमरीका तथा ब्रिटिश आइल्स का परस्पर मेल होना कुछ अधिक कठिन भी नही है, क्योंकि दोनो देश के निवासी एक ही जाति के हैं तथा उनका एक ही धर्म, भाषा तथा साहित्य है। दोनों जातियो का सामाजिक जीवन एक ही सा है। स्टीमर तथा तार ने परस्पर की दूरी को बहुत कुछ घटा दिया है। अतएव यह कुछ असम्भव नही है कि दोनों देश प्रेम-सूत्र मे बंध जायें तथा ब्रिटिश आइल्स और अमरीका के संयुक्त-राज 'दी युनाइटेड स्टेट्स एण्ड दी ब्रिटिश अमरीकन यूनियन' के नाम से पुकारे जाने लगे।

वाणिज्य विषयक विचार।

कार्नेगी निर्बन्ध वाणिज्य की नीति (Free Trade Policy) का मानने वाला था, किन्तु उसका यह विचार नहीं था कि अर्थ-शास्त्र के सिद्धान्त सार्वभौमिक होते हैं। अमरीका के लिये वह संरक्षित वाणिज्य की नीति (Protection Policy) अच्छी समझता था।

आप्टिमिज्म्।

कार्नेगी 'आप्टिमिस्ट' (Optimist) था। उसका विचार था कि संसार अभी बड़ी उन्नति करेगा। इस उन्नति की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। एक स्थान पर उसने लिखा है:— "मैं सामाजिक उन्नति का इच्छुक हूं। मैं हर्बर्ट स्पेन्सर का शिष्य हूं। इस बात की सीमा निर्धारित करना सर्वथा असम्भव है कि मनुष्य जाति कहां तक उन्नति कर सकती है या उसके मस्तिष्क, शरीर तथा सामाजिक सङ्गठन में क्या २ परिवर्त्तन होसकते हैं। मेरे विचार मे हम उन्नति की ओर अग्रसर होरहे हैं तथा अन्त में स्वर्णयुग मे पहुंच जायेंगे।"
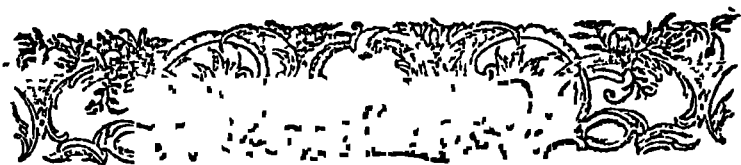
ग्यारहवां प्रकरण ।

श्रम तथा पूंजी ।

The true epic of our times is not "Arms and the Man", but "Tools and the Man"—an infinitely wider kind of epic

—Carlyle.

आधुनिक समय मे श्रम तथा पूंजी—सरमायेदारों (Capitalists) तथा मज़दूरो—का प्रश्न कितना जटिल हो रहा है, स्यात् ही और कोई प्रश्न ऐसा जटिल हो। कोई दिन ऐसा होता होगा जिस दिन किसी कारखाने के मज़दूर असन्तुष्ट हो कर हड़ताल न करते हो। रूस मे बाल्शविज़्म का प्रचार मज़दूरो की अशान्ति ही का परिणाम है। ससार की भविष्य उन्नति तथा शान्ति के लिये मज़दूरों तथा मालिकों के झगडों का सदा के लिये निपटारा होना अत्यन्तावश्यक है। कार्नेगी की आयु का अधिकाश मज़दूरों ही मे

व्यतीत हुआ है। इस कारण कारखाने वालों तथा मज़दूरों के पारस्परिक व्यवहार पर उस के विचार विशेष महत्त्व रखते हैं।

कार्नेगी का विचार था कि कारख़ाने वालों तथा मज़दूरों के पारस्परिक झगड़ों का मुख्य कारण कारख़ाने वालों का स्वार्थ है। किन्तु साथ ही साथ कार्नेगी मज़दूरों को भी बिल्कुल निर्दोष नहीं समझता था। उस का कहना था कि कारख़ाने वाले चाहते हैं कि हम मज़दूरों के परिश्रम से करोड़पति बन जायें किन्तु मज़दूर कठिनता से अपना पेट ही पालने मे समर्थ रहें। दूसरी ओर मज़दूर चाहते हैं कि जिस प्रकार भी हो काम कम करा जाय और मज़दूरी खूब चोखी ली जाय। इसी कारण कारख़ाने वालों और मज़दूरों में हमेशा चलती रहती है। कार्नेगी के विचारानुसार इस पारस्परिक मन-मुटाव को मिटाने के दो उपाय हैं:—

१—कारख़ाने वाले मज़दूरों को पशु या रुपया कमाने की मेशीन ही न समझें वरन् उन्हे भी कारख़ाने के लाभ का अधिकारी समझें।

२—ऐसे उपाय कार्य-रूप में परिणत किये जायें जिन से मज़दूर कारख़ाने वालों के लाभ को अपना लाभ तथा उनकी हानि को अपनी हानि समझने लगें।

[१] कारख़ाने वालों का मज़दूरों के साथ व्यवहार

कारख़ाने वालों को अपने मज़दूरों को प्रसन्न रखने का भरपूर यत्न करना चाहिये तथा उनके आराम तथा स्वास्थ्य की ओर पूरा २ ध्यान रखना चाहिये। कारख़ाने के मैनेजरों को थोड़ा सा समय इस बात के विचार में भी लगाना चाहिये कि हमारे कारख़ाने के मज़दूर अथवा कारीगर सन्तुष्ट हैं या नहीं? यदि सन्तुष्ट नहीं हैं तो उनके असन्तोष का क्या कारण है? कारण जान लेने पर यथा संभव उस कारण को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

मज़दूरों या कारीगरों से ८ घन्टे से अधिक काम नहीं लेना चाहिये। १२ घन्टे काम लेने से उन्हें मनोरञ्जन तथा इष्ट मित्रों से मिलने के लिये समय नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त बहुत से आवश्यक काय भी करने से रह जाते हैं। सारे दिन काम में लगे रहने के कारण अपनी दशा को भविष्य में उन्नत बनाने के उपाय भी वे नहीं सोच सकते। इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर कार्नेगी ने अपने कारखाने में कारीगरों से आठ घन्टे काम लेना आरम्भ कर दिया था, किन्तु जैसा कि पाठक पीछे पढ़ चुके हैं, कतिपय अन्य कारखाने वालों के अनुसरण न करने के कारण, कार्नेगी को काम करने का समय फिर पूर्ववत् आठ घन्टे के स्थान मे १२ घन्टे करना पड़ा।

मज़दूरों या कारीगरों के रहने के लिये मकान खूब हवादार बनवाने चाहियें। इस बात का यत्न करना चाहिये कि कारख़ाने में काम करते समय किसी प्रकार की दुर्घटना न हो। यदि कोई आकस्मिक दुर्घटना हो भी जाय तो आकस्मिक दुघटना के कारण ज़ख्मी होने वाले मज़दूर की अथवा उस की मृत्यु हो जाने की दशा मे उसके वंश वालों की यथेष्ट सहायता करनी चाहिये।

मजदूरों की ज्ञानवृद्धि के लिये पुस्तकालय तथा वाचनालय और उनके मनोरञ्जन के लिये गायन-शालायें (Music Halls) स्थापित करने चाहियें।

वृद्धावस्था के कारण काम करने मे असमर्थ हो जाने वाले मज़दूरों या कारीगरों को पेन्शन भी देनी चाहिये।

[२] मज़दूर किस प्रकार कारख़ाने के लाभ को अपना लाभ समझ सकते हैं।

मज़दूरों अथवा कारीगरों के सहयोग ही से कारख़ाने की पूर्ण उन्नति हो सकती है और मज़दूर या कारीगर उसी समय

जी जान से काम कर सकते हैं जब वे कारखाने के काम को अपना काम, उस के लाभ को अपना लाभ तथा उसकी हानि को अपनी हानि समझने लगें।

ऐसा करने के लिये प्रत्येक मास के आरम्भ में एक सभा करनी चाहिये। उस में मजदूरों को भी बुलाना चाहिये। इस सभा में कारखाने वालों तथा मज़दूरों को मिल कर इस बात का अनुमान करना चाहिये कि आगामी मास में कारखाने को कितना लाभ होगा। उस लाभ के अनुसार ही आगामी मास की मजदूरी निश्चित होनी चाहिये।

इस मे सन्देह नहीं कि कार्नेगी के उक्त विचार बहुत ही सारगर्भित हैं तथा उनके अनुसार कार्य करने से मालिकों तथा मज़दूरों के झगड़े बहुत कुछ मिट सकते हैं।

बारहवां प्रकरण ।

शिल्प तथा वाणिज्य ।

What cannot art and industry perform,
When science plans the progress of their toil!

—Beattie.

र्नेगी ने अपनी अपरिमित सम्पत्ति वाणिज्य द्वारा उपार्जन की थी । इस कारण वाणिज्य का उसकी दृष्टि मे बडा महत्त्व था । वह इस बात का मानने वाला था कि "व्यापारे वसति लक्ष्मी" अर्थात् व्यापार मे लक्ष्मी का वास है। उस का कहना था कि आधुनिक समय मे किसी जाति के अभ्युत्थान तथा पतन का कारण उस का शिल्प तथा वाणिज्य ही है। वह राज्य विस्तार के पक्ष में नही था । उस का कहना था कि वाणिज्य बादशाही झण्डे की अनुगामिनी नही है, वरन् सस्ते मूल्य के आगे चलने वाली है । इस कारण वह इस बात का बडा पक्षपाती था कि विश्वविद्यालयों मे शिल्प तथा

वाणिज्य की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध होना चाहिये। इस विषय में उस के विचारों का दिग्दर्शन कराने के लिये हम उसके एक पत्र के कुछ अंश का अनुवाद—जो उसने ५० हजार पौण्ड बरमिन्घम विश्वविद्यालय को दान देते हुवे राइट आनरेबिल जोजेफ चेम्बरलेन एम्० पी० के नाम भेजा था—पाठकों की भेंट करना चाहते हैं.—

प्रिय मिस्टर चेम्बरलेन,

मिडलैण्ड के निवासियों के लिये बरमिन्घम में एक विश्व-विद्यालय स्थापित करने का आपका विचार मुझे बहुत पसन्द है। जब आप के लोहे तथा फौलाद के कारखानों के सभासद संयुक्त प्रदेश के कारखानों का निरीक्षण करके न्यूयार्क को वापिस आये थे तो उन्होंने मेरे साथ खाना खाया था। खाने के समय बहुत सी मनोरञ्जक वक्तृतायें हुई थीं। एक वक्तृता के अन्तिम भाग को मैं सदैव याद रक्खूंगा। आप के यहा की सब से बढ़िया कम्पनी के साझी ने कहा था—" मिस्टर कार्नेगी! हमारी ईर्षा का कारण आप की अद्भुत मैशीनरी या आपके अनुपम खनिज पदार्थ नहीं हैं। वह कोई और ही चीज है। वह उन विज्ञानवेत्ता युवकों का समूह है जो आपके कारखाने के प्रत्येक विभाग में काम करता है। इंग्लैण्ड मे हम को ऐसे कार्य-कुशल युवक नहीं मिल सकते।

ऐसे सच्चे शब्द किसी अवसर पर मुंह से न निकाले गये होंगे। यदि ग्रेटब्रिटेन शिल्प तथा वाणिज्य में अपनी ख्याति स्थिर रखना चाहता है तो ऐसे कार्य कर्त्ताओं को, शीघ्र या कुछ काल उपरान्त, अवश्य प्राप्त करना चाहिये। मेरे विचार में मिड-लैण्ड ऐसा स्थान है जहा ऐसे कार्य पटु युवक अवश्य पैदा हो जायेंगे। यदि मैं तुम्हारे स्थान में होता तो आक्सफ़ोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों को निरर्थक प्रमाणित कर देता। ये दोनों

विश्वविद्यालय अपने उद्देश्य को पूर्ण-रूप से पूरा कर चुके हैं। बरमिन्धम के विश्वविद्यालय मे विज्ञान की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान रहना चाहिये। प्राचीन भाषायें अनावश्यक समझी जानी चाहिये।

जो रुपया तुमने विज्ञान विभाग के लिये एकत्रित करने का निश्चय किया है उस मे मैं बड़ी प्रसन्नता से पचास सहस्र पौण्ड देता हूं। मेरा विचार है कि बरमिन्धम निवासी मेरे भाई एट-लाण्टिक पार के अपने एक भाई की इस भेट को अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करेंगे। तथा इस देश को अपनी शिक्षा का आदर्श बनायेंगे।

नूतन संसार (New Woıld) की महत्ता तथा वैभव प्राचीन संसार (Old World) ही के कारण है। बीस्मर, सीम्ज़ तथा टामस ने अपने सब प्रयोग (Experıments) प्राचीन ससार ही मे किये थे। इन तीन प्रसिद्ध विद्वानो की कृपा से ही हम लाखों टन फ़ौलाद तीन पौण्ड प्रति पैनी (इकन्नी) की दर से बेचने मे समर्थ हुवे हैं। यह भेंट उस कृतज्ञता को प्रदर्शन करने के लिये है जिसके भार से पिट्सबर्ग का कारख़ाना जो इन आविष्कारों का स्मृति-चिन्ह है—कभी उऋण नही हो सकता। मेरी प्रर्थना है कि आप को शीघ्र कृतकार्यता हो।

आप का शुभचिन्तक,

एन्ड्रू कार्नेगी।

यद्यपि कार्नेगी अन्य विषयों की उच्च शिक्षा का विरोधी नहीं था, किन्तु उस का विचार था कि शिल्प, वाणिज्य, विज्ञान तथा सम्पति शास्त्र की शिक्षा पर प्राचीन भाषाओं की शिक्षा की अपेक्षा अधिक ध्यान देना चाहिये। कार्नेगी का विचार था कि शिल्प तथा वाणिज्य मे उच्च शिक्षा की अपेक्षा व्यवहारिक

अनुभव की अधिक आवश्यकता है। वह कहा करता था कि वास्तविक शिक्षा विद्यालयों से बाहर प्राप्त होती है। प्रतिभा देसी पौधा नहीं है जो केवल विद्यालयों की चार दीवारों में उगता है। प्रतिभा जंगली पौधा है जो प्रत्येक स्थान में उग सकता है। एक बार उसने कहा था :—

"वाणिज्य क्षेत्र में मैंने बहुत कम ऐसे युवक देखे हैं जिन्हें कालिज की शिक्षा ने हानि न पहुंचाई हो !"

एक और स्थान पर उसने लिखा था—

"वाणिज्य के लिये मानुषिक प्रकृति का ज्ञान अत्यन्त लाभकारी है। यदि कोई वाणिज्य क्षेत्र में आना चाहता है तो उस को बहुत दिनों तक कालिज में पढ़ते रहना उचित नहीं है। मेरे विचार में कालिज का कोर्स समाप्त करने से, जिस के समाप्त करने में बीस वर्ष से लेकर चौबीस वर्ष तक की आयु हो जाती है, मनुष्य ऐसा अच्छा सौदागर नहीं बन सकता जैसा अल्पावस्था ही से इस विषय का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने से बन सकता है। मेरे साथ काम करने वाले मुख्य २ मनुष्य बीस वर्ष की आयु से पहिले ही इस क्षेत्र मे आगये थे।"

इस मे सन्देह नहीं कि कार्नेगी ने शिल्प, व्यवसाय तथा विज्ञान की शिक्षा को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया है, किन्तु फिर भी उसके विचारों में बहुत कुछ तथ्य है।
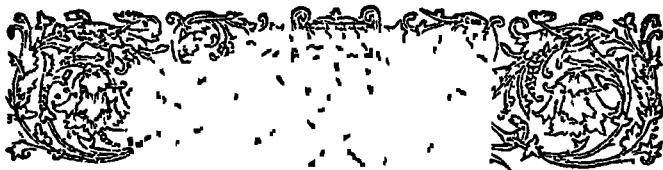
तेरहवां प्रकरण।

कार्नेगी के धन सम्बन्धी विचार।

Money was made, not to command our will,
But all our lawful pleasures to fulfil
Shame and woe to us, if we our wealth obey;
The horse doth with the horseman run away

—Abraham Cowley.

Make all you can, save all you can, give all you can.

—Wesley.

धनवान् होने के विचार से राक फ़ैलर के बाद कार्नेगी ही का नम्बर था। कार्नेगी के धन की पाई २ कार्नेगी ही की कमाई हुई थी। अतएव कार्नेगी के धन सम्बन्धी विचार विशेषतया जानने योग्य हैं।

निर्धन होने के लाभ।

हमारे कवि तथा तत्त्वज्ञानी तो प्राचीन काल से निर्धनता की प्रशंसा के राग गाते आये हैं, किन्तु हमारे समय का सब से बड़ा दान कुबेर भी निर्धनता का पोषक तथा प्रशंसक था। कार्नेगी के विचार केवल कवि-कल्पना ही नहीं हैं। वे एक ऐसे मनुष्य के विचार हैं जिस को बहुत दिनों तक निर्धनता से युद्ध करना पड़ा था।

एक बार कार्नेगी से प्रश्न किया गया कि लखपति होने की इच्छा रखने वाले लड़कों को क्या २ सुगमतायें प्राप्त होना अत्यन्त हितकर हैं? कार्नेगी ने उत्तर दिया कि आरम्भ में निर्धन होना ही लड़कों को भविष्य में लखपति बनने में सब से अधिक सहायता देता है। निर्धन लड़का समझ लेता है कि या तो अपने उद्देश्य को प्राप्त करूंगा या प्राप्त करने ही में जान दे दूंगा। उसके विचार में मृत सिंह जीवित कुत्ते से अच्छा होता है।

निर्धनता से अच्छा और कोई शिक्षक नहीं है। निर्धनता के कारण अपने माता पिता को धनोपार्जन के लिये जी तोड़ परिश्रम करते देख कर, बचपन ही से परिश्रम करने की महत्ता लड़के के हृदय में बैठ जाती है। निर्धन लड़का समझ लेता है कि मैं तो एक मात्र परिश्रम द्वारा ही उन्नति शिखर पर पहुंच सकता हूं।

संसार के अधिकतर प्रसिद्ध पुरुष आरम्भ में निर्धन ही थे। सब से विख्यात शेक्सपियर ऊन बुनने वाला था, बर्न्स हल चलाने वाला था। कोलम्बस मल्लाह था, हैनीबाल सुनार था, लिन्कन रेल की पटड़ी बिछाने वाला था, ग्रान्ट चमार था।

यहां पर एक बात ध्यान में रखनी चाहिये। निर्धन युवकों से कार्नेगी का संकेत निरुद्योगी, आलसी तथा चरित्र-हीन युवकों

की ओर नहीं हैं जो आरम्भ ही मे दुर्व्यसनों का शिकार हो जाते हैं और कहते रहते हैं—

अजगर करें न चाकरी पक्षी करें न काम।
दास मलूका यो कह गये सब के दाता राम॥

कार्नेगी ने अपने एक लेख मे एक स्थान पर लिखा था:—

'हमारा यह धर्म नही है कि हम डूबतों को उभारें। हमारा तो यह धर्म है कि हम तैरने वालों का सर पानी से ऊपर रक्खे।" तैरने वालों से कार्नेगी का आशय परिश्रमी युवकों से है जो अपनी दशा को उन्नत करने का भरसक प्रयत्न करते रहते हैं।

हम लोग भी बहुधा निर्धनता के गुण अलापा करते हैं। कहते रहते हैं—'अमीरी क्या बिचारी है। ग़रीबी खुदा को प्यारी है।' किन्तु हम निर्धनता की प्रशंसा अपने मन को बहलाने के लिये करते हैं और कार्नेगी निर्धनता की प्रशंसा इस कारण किया करता था कि वह मनुष्य को अधिक उद्योगी तथा परिश्रमी बनाती है।

करोड़पति किस प्रकार बनें ?

कार्नेगी ने करोड़पति बनने की इच्छा रखने वाले युवकों को कुछ शिक्षाये दी हैं जो करोड़पति बनने की इच्छा रखने वाले युवकों के बड़े काम की हैं।

(१) सब से पहिली बात जिस पर कार्नेगी ने ज़ोर दिया है यह है कि युवकों को युवावस्था के आरम्भ ही में कोई काम आरम्भ कर देना चाहिये। काम नीची से नीची नौकरी से आरम्भ करना चाहिये। कारखाने मे झाड़ू तक देने में संकोच नही करना चाहिये।

आज कल के बहुत से प्रख्यात सौदागरो ने अपना जीवन झाड़ू देने के काम से प्रारम्भ किया था। किन्तु उस छोटे से काम पर ही अपने उद्देश्य की इति श्री नही समझ लेनी चाहिये। कारखाने की मैनेजरी तक ही अपने विचारों को परिमित नहीं

रखना चाहिये। यह समझ लेना चाहिये कि हम एक दिन बादशाह बन कर रहेंगे। साथ ही साथ एक मात्र ख्याली पुलाव भी नहीं पकाते रहना चाहिये, वरन् उद्देश्य-पूर्ति के लिये यथाशक्ति प्रयत्न भी करना चाहिये। इस बात को समझ लेना चाहिये'—

उलुनवज्मने दिन जब करने पै आते हैं।
समुद्र पाटते हैं कोह से दर्या बहाते हैं॥

(२) कारखाने के स्वामी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

इस काम में कृतकार्य होने का रहस्य यही है कि यह मत सोचो कि मैं अपने स्वामी के लिये क्या करूं, प्रत्युत् यह सोचो कि मैं अपने स्वामी के लिये क्या कर सकता हूं। केवल अपने काम को ठीक प्रकार से करना ही यथेष्ट न समझो। उन्नति की इच्छा रखने वाले में असाधारण योग्यता होनी चाहिये। अपने काम के अतिरिक्त कारखाने के अन्य कामों को भी ध्यान में रखना चाहिये तथा उन का थोड़ा बहुत ज्ञान होना चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि कभी कोई ऐसी आज्ञा दी जाये जिस से कारखाने की हानि होती हो, तो तत्काल उस आज्ञा को मानने से इन्कार कर दो। बहुधा कहा जाता है कि सेवक का काम तो स्वामी की आज्ञा पालन करने ही का है, चाहे उस से स्वामी की हानि ही क्यों न हो। यह कथन भ्रम-मूलक है। तुम को इस सिद्धान्त पर कभी नहीं चलना चाहिये। संसार में ऐसा कोई प्रसिद्ध मनुष्य नहीं हुआ है जिसने समय विशेष पर निश्चित नियमों का उल्लंघन न किया हो। कारखाने में सम्मिलित होने ही के अधिकारी तुम उस समय हो सकते हो जब तुम कारखाने के विषय में स्वामी से अधिक जानते हो। जो कुछ तुम्हारे विचार तथा युक्तियां हों उनको कारखाने के स्वामी के

सन्मुख निर्भयता पूर्वक उपस्थित कर देना चाहिये। इससे प्रमाणित हो जायगा कि जब कारखाने का मालिक अन्य कामो मे लगा रहता था तो तुम उस काम के विषय मे सोचते रहते थे तथा उस का लाभ बढ़ाने की चेष्टा करते रहते थे चाहे तुम्हारी युक्तियां ठीक हों या नही, किन्तु तुम अपने स्वामी का ध्यान अपनी ओर अवश्य आकर्षित कर लोगे। वह समझ जायगा कि तुम कारखाने के सच्चे शुभचिन्तक हो। ऐसा कोई मनुष्य नही है जो दिल से काम करने वाले योग्य मनुष्य का मान न करे। यदि तुम्हारा स्वामी ऐसा नही करता है तो वह इस योग्य नही है कि तुम उस के पास रहो। तुम्हें तत्काल उस की नौकरी छोड़ देनी चाहिये।

कार्नेगी ने एक वार कहा था कि मेरे फर्म मे जिन युवकों ने उन्नति की है उन को अपने काम का इतना ज्ञान था कि मुझे उन की अपेक्षा आधा भी न था। बहुधा अवसरो पर उन्होने मेरे साथ इस प्रकार काम किया मानो वे कारखाने के स्वामी थे तथा मैं न्यूयार्क का कोई सैर करने वाला था। ऐसे मनुष्य बहुत शीघ्र अपने स्वामी आप वन जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य ऐसे व्यक्ति की खोज में रहता है।

(३) करोपड़पति बनने की इच्छा रखने वाले युवकों के लिये यह भी अत्यन्तावश्यक है कि उन्हें आरम्भ ही से थोड़ा बहुत बचाना आरम्भ कर देना चाहिये। सदैव अपना व्यय अपनी आय से कम रखना चाहिये। कितनी ही कम आमदनी क्यों न हो उस में से भी थोड़ा बहुत अवश्य बचाया जा सकता है। इस बात का ध्यान नही करना चाहिये कि इस थोडी सी बचत से हो ही क्या सकता है? यहीबचत धीरे २ जुड़ कर बडी रक़म हो सकती है तथा अवसर मिलने पर काम मे लाई जासकती है

उन्नति का अवसर प्रत्येक मनुष्य को मिलता है। जो उस अवसर से लाभ उठा सकते हैं वे ही भाग्यवान कहलाते हैं तथा जो उस अवसर से लाभ नहीं उठासकते या लाभ उठाने में असमर्थ रहते हैं वे ही अपने आपको अभागा समझते हैं। अतः मनुष्य को प्रति समय अवसर से लाभ उठाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

(४) सट्टेकी पास नहीं फटकना चाहिये। बहुत से नवयुवक समझते हैं कि सट्टे द्वारा हम शीघ्र ही लखपति हो जायेंगे किन्तु ऐसा समझना उन की भूल है। संसार में कोई भी उदाहरण ऐसा नहीं है कि कोई मनुष्य सट्टे द्वारा धनवान् हो गया हो तथा उसी दशा में सदैव रहा हो। बहुधा जुवारियों को भूखे मरते तथा आत्म हत्या तक कर डालते देखा जाता है। सट्टे या जुवे के कारण मनुष्य को धन तथा मान दोनों से हाथ धोने पड़ते हैं। निस्सन्देह कभी २ सट्टे से बहुत शीघ्र बिना किसी परिश्रम के अच्छा लाभ भी हो जाता है, किन्तु अन्तिम परिणाम बुरा ही होता है।

(५) अपने लिए अपनी योग्यता तथा रुचि के अनुसार कोई एक काम पसन्द कर लेना चाहिये तथा उसी के करने में तन, मन, धन से जुट जाना चाहिये। हमारी निष्फलता का एक प्रधान कारण यह भी होता है कि एक समय एक से अधिक कामों पर मन दौड़ाने लगते हैं। जिन मनुष्यों का एक ही लक्ष्य नहीं होता उन्हें कभी सफलता नहीं होसकती। यह कहावत गलत है कि 'अपने सब अण्डे एक ही टोकरी में मत रक्खो।' नहीं! अपने

सब अण्डे एक ही टोकरी मे रक्खो और फिर उस टोकरी की खूब हिफ़ाजत करो।

(६) शराब से परहेज़ करना चाहिये। यह बहुत बुरी आदत है जो समय, मस्तिष्क, स्वास्थ्य तथा धन सब का नाश करदेती है। खाने से पहले शराब को बिल्कुल नहीं छूना चाहिये। यदि बहुत जी चाहे तो खाने के समय एक आध प्याला पी लेना चाहिये।

(७) मनोरञ्जन के लिए थोडा बहुत समय अवश्य रखना चाहिये। मनोरञ्जन भी मनुष्य के लिए अत्यन्तावश्यक है। कार्नेगी ने एक स्थान पर लिखा है, " मुझको अपने जीवन मे कृतकार्यता प्राप्त करने का मुख्य कारण यह है कि मैं चिन्ता-सागर मे नही डूबारहता था। आपत्तियें मेरे ऊपर से इस प्रकार चली जाती थी जिस प्रकार बत्तख़ के ऊपर से पानी"। इसके अतिरिक्त थोड़ा बहुत समय अपनी भविष्य उन्नति के विषय मे सोचने के लिए भी रखना चाहिये। जो मनुष्य ऐसा नही करते वे कोल्हू के बैल के समान जिस जगह होते हैं वही पड़े रहते हैं।

धन का उपयोग

अब प्रश्न उठता है कि करोडपति बनने की आकांक्षा मे सफल होने पर उस अतुल धन का किस प्रकार उपयोग किया जाय। कार्नेगी के विचार के अनुसार धन का उपयोग निम्न प्रकार किया जा सकता है:—

(१) अपनी अतुल सम्पत्ति अपने वंश वालो के आराम के लिए छोड़ दी जाय।

(२) इस प्रकार की वसीयत करदी जाय कि सरकार या कोई विशेष कमैटी उस धन को सर्वोपयोगी कार्यों मे लगादे।

(३) अपनी जीवितावस्था ही मे अपनी अतुल सम्पत्ति सर्वोपयोगी कार्यों मे लगा दी जाय।

कार्नेगी का कहना था कि पहिली दोनों रीतियां सर्वथा दूषित हैं। अपनी सन्तति के लिए अतुल धन सम्पत्ति छोड़ जाना उन पर शक्ति से अधिक बोझ लादना है। पिता का यही कर्तव्य है कि अपनी सन्तान को उचित शिक्षा दिला दे तथा सरकारी नौकरी या वाणिज्यव्यवसाय करने के लिए आरम्भ में जितनी सहायता की आवश्यकता हो दे दे। उस से अधिक सहायता देने से सन्तान आलसी हो जाती है तथा मेहनत से जी चुराने लगती है। कार्नेगी कहा करता था कि परिश्रम जीवन के लिये आक्सीजन (Oxygen) के समान है। इस के बिना स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता।

कार्नेगी का कहना था कि करोड़पति निर्धनों के केवल धरोहर रखने वाले होने चाहियें। उन का तो यही कर्तव्य है कि समाज की बढ़ी हुई धन सम्पत्ति को अपनी संरक्षकता में रक्खें तथा उस सम्पत्ति को समाज के हितकर कार्यों में लगाते रहें।

कार्नेगी कहता था कि वही व्यक्ति मनुष्य जाति का मित्र कहलाने का अधिकारी है जो अपनी सब सम्पत्ति सर्वोपयोगी कामों में लगा दे तथा स्वयं मेहनत करके अपना निर्वाह करे। यद्यपि आज तक सर्वोपयोगी कार्यों के लिये किसी ने कार्नेगी से अधिक दान नहीं दिया है, फिर भी कार्नेगी अपने आप को इस उच्च उपाधि का अधिकारी नहीं समझता था, क्योंकि उस ने परिभाषा की दूसरी शर्त पूरी नहीं की थी। कार्नेगी की उदारता तथा नम्रता दोनों ही प्रशंसनीय हैं।

कार्नेगी इस बात को भी ठीक नहीं समझता था कि अपनी सम्पत्ति को सर्वोपयोगी कार्यों में लगाने का भार वसीयत द्वारा सरकार या किसी कमेटी पर छोड़ दिया जाय। वह कहता था कि धनवान् मरना पाप है सरकार बाद में छोड़ी हुई सम्पत्तिपर

इसी लिये भारी टैक्स लगाती है क्योंकि वह स्वार्थी करोड़पति के जीवन को घृणा की दृष्टि से देखती है।

दो कारणो से कार्नेगी ऐसा करने के विरुद्ध था। एक तो यह कि यदि कोई मनुष्य वसीयत द्वारा अपनी सम्पत्ति को सर्वोपकारी कार्यों मे लगाने का भार सरकार या किसी कमेटी पर छोड़ जाता है तो उस से सूचित होता है कि या तो सम्पत्ति छोड़ जाने वाले मे इतनी योग्यता नही थी कि वह स्वयं उस का सदुपयोग कर जाता या वह रुपये का इतना लोभी था कि मरते दम तक रुपये को अपने से अलग नही कर सका और मरते समय रुपये को अपने साथ ले जाने में विवश हो कर उस के उपयोग का भार दूसरों के ऊपर छोड़ गया है। दूसरे यह कि बहुधा ऐसा होता है कि सरकार या कमेटी उस के धन का उपयोग उस की इच्छा के अनुसार नही करती। इन कारणो से कार्नेगी का कहना था कि जो मनुष्य धन सम्पत्ति छोड़ कर मरता है वह मानो अपनी मूर्खता की एक ऊंची लाट बना जाता है।

करोड़पतियों को अपना धन किन २ कामों में लगाना चाहिये।

कार्नेगी का कहना था कि करोड़पतियों को अपनी अतुल सम्पत्ति अपनी जीवितावस्था ही मे सर्वोपयोगी कार्यों मे लगा देनी चाहिये। यही धन का सब से अच्छा उपयोग है। सन् १८९१ ई० मे कार्नेगी ने "नार्थ अमरीकन रिव्यू" नामक पत्र मे इस विषय पर एक लेख लिखा था। इस लेख मे कार्नेगी ने बताया था कि करोड़पतियो को अपना धन निम्नलिखित कार्यों मे व्यय करना चाहिये·—

(१) नया विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय या पुराने विश्वविद्यालयों को उन्नतावस्था में लाया जाय।

(२) शुल्क-हीन पुस्तकालय (Free Libraries) खोले जायें।

(३) अस्पताल तथा औषधालय खोले जायें।

(४) सर्वसाधारण के लिये आमोद स्थान बनवाये जायें।

(५) पब्लिक हाल बनवाये जायें।

(६) स्नानागार बनवाये जायें।

(७) गिरजा घर बनवाये जायें।

[१] विश्वविद्यालय।

कार्नेगी विद्यादान को सब से बड़ा दान समझता था। कार्नेगी द्वारा स्थापित पिट्सबर्ग के शिल्प विद्यालय का वृत्तान्त पाठक पढ़ ही चुके हैं। इस के अतिरिक्त कार्नेगी ने और भी बहुत से विश्वविद्यालयों को सहायता दी थी।

[२] शुल्क-हीन पुस्तकालय।

ऐसे पुस्तकालय स्थापित किये जायें। जिन से सर्वसाधारण बिना कुछ चन्दा दिये लाभ उठा सकें। कार्नेगी का विचार था कि पुस्तकालयों द्वारा विद्या प्रचार में जितनी सहायता मिल सकती है उतनी और किसी स्रोत से नहीं मिल सकती। एक बार उस ने कहा था—"मैं ने अपने अनुभव में कोई ऐसी छोटी चीज नहीं देखी है जो पुस्तकालयों के समान लाभप्रद हो।" बचपन हीसे कार्नेगी को पुस्तकालयों से प्रेम था। उसी समय से उसने निश्चित कर लिया था कि यदि किसी समय में सम्पत्तिशाली हो जाऊंगा तो अपनी सम्पत्ति को पुस्तकालय स्थापित करने में लगाऊंगा। हमारे भारतवर्ष में तो अविद्यान्धकार दूर करने के लिये पुस्तकालयों की और भी अधिक आवश्यकता है। क्या ही

अच्छा हो यदि यहा के धनिको के विचार भी कार्नेगी ही के समान होजायें।

[३] अस्पताल तथा औषधालय

ऐसे अस्पताल तथा औषधालय खोले जाये जिन में निर्धन तथा निस्सहाय रोगियों का मुफ्त मे इलाज हो सके। इससे अधिक उपकार का काम क्या हो सकता है कि अपने भाइयों को काल का ग्रास होने से बचा लिया जाय। हमारे देश मे शिक्षित दाइयो के अभाव के कारण बहुत सी स्त्रियें बच्चा पैदा होते समय काल के गाल मे चली जाती हैं। क्या ही अच्छा हो यदि यहां के धनवानों के उद्योग से प्रत्येक शहर मे ऐसे स्कूल खुल जायें जहा पर दाइयों को मुफ्त मे चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा दी जाय।

[४] सर्व साधारण के लिए आखेट स्थान।

योरप तथा अमरीका मे १०० पीछे ६६ आदमी आखेट के प्रेमी होते हैं। वहा पर अधिकतर आखेट-स्थान धनवान् लोगों ही के होते हैं। इन स्थानो पर शिकार करने के लिये उनके स्वामी तथा उनके मित्र ही जा सकते हैं। अतः ऐसे आखेट-स्थानो का होना भी आवश्यक है जहां पर विना किसी प्रकार की रोक टोक के जन साधारण आखेट के लिये जा सकें और अपना मनोरञ्जन कर सकें।

[५] पब्लिक हाल।

प्रत्येक शहर मे ऐसे बड़े २ हालों (कमरों) की भी बहुत बडी आवश्यकता है जहा पर व्याख्यान आदि का प्रबन्ध किया जा सके। इन कमरो मे जन साधारण के मनोरञ्जन के लिये यदि गायन विद्या का सामान रहे तो और भी अच्छा हो।

[६] स्नानागार।

ऐसे स्नानागारों का होना भी, जहां तैरने का भी प्रबन्ध हो, स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत हितकर है।

[७] गिरजे।

कार्नेगी ने गिरजों को सब से अन्तिम स्थान दिया है। कार्नेगी ने उपरोक्त छहों कामों के लिये दिल खोल कर दान दिया था, किन्तु कोई गिरजा नहीं बनाया। इसका मुख्य कारण यही है कि कार्नेगी मनुष्यमात्र को अपना भाई तथा सहायता का पात्र समझता था। कार्नेगी को संकुचित हृदय वाले मनुष्यों से बड़ी घृणा थी। ईसाई मत के भिन्न २ पन्थों के सकुचित विचार देख कर ही कार्नेगी ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया।

कार्नेगी को कंजूसों से बड़ी घृणा थी। 'नाइन्टीन्थ सैंचुरी' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित अपने एक लेख में कार्नेगी ने धनवानों को सम्बोधन करते हुए लिखा था,—

"धनवानों को चाहिये कि पृथ्वी माता की गोद में सदैव के लिये सोने से पूर्व ही अपनी समस्त सम्पत्ति निर्धनों को दे दें। ऐसा करने से मरने के बाद संसार उन पर धन का सदुपयोग न जानने का कलङ्क नहीं लगा सकेगा। यदि ऐसा करने से मरने समय किसी मनुष्य के पास फूटी कौड़ी भी नहीं रहेगी तो भी ऐसा व्यक्ति मनुष्य जाति के प्रेम तथा सेवा की दृष्टि से सर्वशिरोमणि समझा जायगा। मरने पर उसके शरीर में से एक देवदूत आकर उसके कान में कहेगा कि तूने अपने इस छोटे से जीवन ही में संसार का बहुत कुछ उपकार कर दिखाया। तेरा जीवन सफल है"। किन्तु इन बातों से यह नहीं समझना चाहिये कि कार्नेगी इस ही चिन्ता में रहता था कि जिस प्रकार भी हो

सके धन से छुटकारा पाजाऊं। जो कोई भी सहायता मागे उसी को मुंह मागा दान दे डालू। कार्नेगी किसी संस्था या व्यक्ति को दान देने से पहिले बहुत अच्छी तरह सोच लेता था कि जिस को मैं सहायता दे रहा हू वह सहायता का पात्र भी है या नही। कार्नेगी के पास प्रति दिन कम से कम तीनसौ पत्र सहायता मागने के विषय मे आते थे। इन मे से अधिकांश पत्र तो विना किसी प्रकार का उत्तर दिये ही रद्दी को टोकरी की भेट कर दिये जाते थे। और किया भी क्या जा सकता था। महाकवि ग़ालिब ने ठीक ही कहा हैं:——

कौन है जो नही है हाजित मन्द।
किस की हाजित रवा करे कोई॥

सम्भव है कि बहुत से पाठक कार्नेगी के धन विषयक विचारो से सहमत न हो किन्तु यह बात सब को माननी पडेगी कि यदि संसार के धनवान् कार्नेगी के कहने पर चलने लगें तो निर्धनो के बहुत कुछ सकट दूर हो जायें।
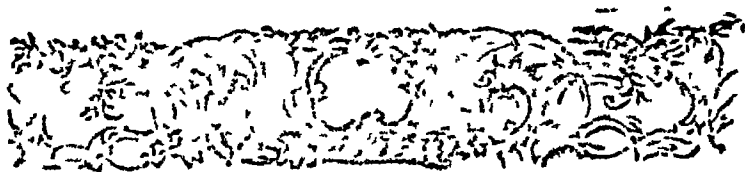
चौदहवां प्रकरण।

कार्नेगी के कुछ अनमोल बोल।

—Bovee.

Our best thoughts come from others

—Emerson

(१) धनवान् मरना पाप है।

(२) कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जिसे कभी उन्नति करने का अवसर न मिला हो।

(३) भविष्य मे उन्नति करने में बचपन की निर्धनता बड़ी सहायता देती है।

(४) सारे दिन ईमानदारी से काम करना सब से अच्छी पूजा है।

(५) जो फ़र्म नौकरों के साथ रियायत करती है तथा उनका भला चाहती है, उसे उन्नति करने का अधिक अवसर मिलता है।

(६) आय आरम्भ होते ही थोड़ा बहुत बचाना अवश्य आरम्भ करदो।

(७) करोड़पतियों को हानि पहुंचाना सर्वसाधारण की बड़ी भूल है, क्योंकि करोड़पति शहद एकत्रित करने वाली मक्खियां हैं जो अपनी पूंजी कुल छत्ते मे बाटतीं हैं।

(८) मैंने अपने अनुभव मे कोई ऐसी छोटी चीज नही देखी है जो पुस्तकालयों के समान लाभदायक हो।

(९) उपाधियां (ख़िताब) मनुष्य पर बुरा प्रभाव डालती हैं।

(१०) उच्च वंश का अभिमान मिथ्या अभिमान है।

(११) अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अपने लिये चाहे कोई सा काम चुन लो। किन्तु एक बार काम चुन लेने के पश्चात् उस काम को करने मे जी तोड कर लग जावो। फिर जो कुछ करो उसे धर्म समझ कर करो।

(१२) अपने सब अण्डे एक ही टोकरी मे रक्खो और फिर उस टोकरी की खूब रक्षा करो।

(१३) शराब और जुवे से यथा शक्ति बचो।

(१४) जिस प्रकार असली सिक्कों से मिलते जुलते नक़ली सिक्के होते हैं, उसी प्रकार "बदनी" वाणिज्य का नक़ली सिक्का है।

(१५) यदि तुम्हारा स्वामी कोई ऐसी आज्ञा दे, जो तुम्हें उसके हित के विरुद्ध मालूम पड़े, तो निरसंकोच उस आज्ञा को मानने से इन्कार कर दो।

(१६) किसी युवक पर बिना परीक्षा लिये रुपयों का बोझ डाल देना, उस को हानि पहुंचाना है।

(१७) हमारा यह धर्म नहीं है कि डूबते हुवे लोगों को उभार कर ऊपर लाये। हम को चाहिये कि तैरने वाले मनुष्यों को ऊपर रक्खें।

(१८) श्रम, पूंजी तथा संगठन शक्ति एक तिपाई के तीन पाये हैं। तीनों का दर्जा बराबर है, जो एक का दर्जा दूसरे से अधिक प्रमाणित करने का यत्न करता है, वह सब का दुश्मन है।

(१९) जो मनुष्य अपना सब धन परोपकार में लगाता है तथा स्वयं परिश्रम करके अपना जीवन व्यतीत करता है, वही मनुष्य " मनुष्य जाति का शुभचिन्तक " कहलाने का अधिकारी है।

(२०) विदेश के बाजारों को अपने अधिकार में करने की यही तरकीब है कि पहिले अपने देश के बाज़ारों को अपने अधिकार में किया जाय।

(२१) भविष्य की चिन्ताओं में सदैव निमग्न रहना समय तथा मस्तिष्क दोनों का खून करना है।

(२२) उस मनुष्य को आदर्श कहना उचित है जो कहता कम हो और करता अधिक हो।

(२३) वाणिज्य बादशाही झण्डे का अनुगामी नहीं है वरन् सस्ते मूल्य के पीछे चलने वाला है।

(२४) अपना प्रभाव जमाने के लिये मनुष्य को अपने हाथ मे लेखनी लेनी चाहिये।

(२५) अवसर की ताक मे मत बैठे रहो। स्वयं अवसर पैदा करो।

(२६) प्रतिभा देसी पौधा नहीं है जो कालिज की चार दीवारी में ही उगता हो। प्रतिभा जंगली पौधा है जो अवसर पाने पर सब जगह विकाश पा सकता है।

(२७) मैं सांसारिक उन्नति का इच्छुक हूं। मेरा गुरू हर्बर्ट स्पैन्सर है। मानुषिक उन्नति की सीमा निर्धारित करना असम्भव है। हम सब उन्तति की ओर अग्रसर हैं और अन्त मे स्वर्ग पहुच जायेंगे।

पन्द्रहवां प्रकरण ।

उपसंहार ।

—Longfellow.

र्नेगी की जीवनी तथा उसके विचारों को पढ़ने से पाठकों को मालूम हो गया होगा कि कार्नेगी का जीवन कैसा सफल, उच्च तथा अनुकरणीय था और उसके विचार कैसे उदार, विद्वत्तापूर्ण तथा सारगर्भित थे।

निस्सन्देह कार्नेगी आधुनिक काल का सब से बड़ा महापुरुष था। आज तक संसार के इतिहास में किसी भी मनुष्य ने उचित

मार्ग द्वारा कठिन परिश्रम से इतना रुपया कमा कर दान में नहीं दिया है। कार्नेगी को मनुष्य जाति का सब से बड़ा शुभचिन्तक कहना अत्युक्ति नहीं है।

कार्नेगी का जीवन जीवन-यात्रा मे सफल होने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रकाश खम्भ के समान हैं। कार्नेगी के जीवनसे अनेक शिक्षाये मिलती हैं। यहा केवल दो एक मुख्य शिक्षाओं का ही उल्लेख कर के इस छोटी सी पुस्तक को समाप्त करेंगे।

सफल जीवन

कार्नेगी का जीवन एक सफल मनुष्य का जीवन है। कार्नेगी के जीवन को ध्यान मे रखने से निराशा कभी सामने नहीं फटक सकती। कार्नेगी का अनुकरण करने वाला कभी नही कह सकता 'मेरा भाग्य ही ऐसा हैं।" ऐसा मनुष्य कभी 'परमेश्वर की कृपा' आदि निर्बलता के विचारों को अपने हृदय मे स्थान नहीदे सकता। जिस प्रकार चुम्बक पत्थर की ओर फ़ौलाद खिच आता है, उसी प्रकार कार्नेगी का अनुकरण करने वाले मनुष्य की ओर सफलता खिंच आती है। इङ्गलंड के प्रसिद्ध तत्ववेत्ता हर्बर्ट स्पैनसर ठीक ही कह गये हैं —

"मनुष्य को अच्छा या बुरा, सुखी या दुखी तथा धनी या कङ्गाल बनाने वाला उसका मन ही है"।

कार्नेगी का जीवन बताता है कि हमको अपनी आकांक्षायें सदैव उच्च रखनी चाहिये। अपने विचारों मे बादशाह बन जाना चाहिये। ओपेन हीम (Open Heim) साहब ने भी कहा है—

No one has a right to be contented, it is one absolutely fatal state

अर्थात् किसी को भी सन्तोषी होने का अधिकार नहीं है। सन्तोष एक प्राण-घातक दशा हैं।

किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा मात्र ही को आकांक्षा नहीं कहते। इच्छा नीच वस्तु की भी हो सकती है, किन्तु आकांक्षा उच्च पदार्थों ही की होती है। दृढ़ इच्छा द्वारा उत्पन्न बलवान विचार ही आकांक्षा कहलाते हैं। आकांक्षा से उन्नति-मार्ग प्रशस्त होता है। जिस प्रकार उड़ने के लिये पङ्खों की आवश्यकता है, उसी प्रकार सफलता प्राप्त करने के लिये उच्च आकांक्षा की आवश्यकता है। सीज़र, नैपोलियन आदि के जीवन इस बात के साक्षी हैं। इङ्गलैंड के धुरन्धर विद्वान् जान मार्ले ने कहा था:—

"उच्च अर्थ में असाधारण मनुष्य के मस्तिष्क की गति को आकांक्षा कहते हैं। आकांक्षा बल को शक्ति पहुंचाती है, मार्ग से कठिनाइयां दूर करती है, विघ्नों को भगाती है तथा सत् कार्यों को आगे बढ़ाती है"।

कार्नेगी के जीवन का पाठ बताता है कि केवल ख्याली पुलाव पकाने से ही सफलता प्राप्त नहीं होती। सफलता प्राप्त करने के लिये साहसी, उद्यमी तथा कर्मयोगी बनने की आवश्यकता है। दैवयोग से कुछ नहीं होता जैसा कि शीलर साहब ने भी कहा है:—

"There is no such thing as chance, and what to us seems merest accident springs from the deeper source of destiny."

अर्थात् 'दैवयोग' कोई चीज़ नहीं है। जो कुछ हम को 'दैवयोग' मालूम पड़ता है, वह सृष्टि के गम्भीरतम नियमों पर अवलम्बित रहता है।

यदि एक जुलाहे का लड़का, बिना किसी सहायता के, अपने ही परिश्रम तथा साहस के कारण अरबपति बन सकता है, तो कोई कारण नहीं मालूम पड़ता कि उसी के समान उद्योग करने पर हम अपने उद्देश्य में क्यों असफल रहेंगे।

कार्नेगी के जीवन से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शिक्षा यह मिलती है कि मनुष्यजीवन का उद्देश्य करोड़ो रुपया कमाना नही है, वरन् मनुष्यजाति का उपकार करना है। जो मनुष्य अपने भाइयो का जितना अधिक उपकार करता है, उतना ही अधिक सफल-जीवन तथा महान् है।

धन का वास्तविक महत्त्व।

इन सब बातों के अतिरिक्त कार्नेगी का जीवन ध्यान पूर्वक पढ़ने से धन का वास्तविक महत्त्व समझ में आ जाता है। धन के विषय मे मनुष्यो के दो प्रकार के परस्पर विरोधी विचार हैं। कुछ मनुष्य तो ऐसे हैं जो कहते हैं कि जो कुछ है धन ही है। इनका विचार है कि जिस प्रकार भी हो सके धन बटोरना चाहिये। क्योंकि 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति' अर्थात् सोने मे सब गुणों का बास है। दूसरी ओर कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो धन को सब बुराइयों की जड़ समझते हैं। इन का विचार है कि ऊंट का सुई के नाके मे को निकल जाना सम्भव है किन्तु अमीरों की ईश्वर के यहां पहुच असम्भव है। ये लोग कहते हैः—

अमीरी क्या विचारी है, गरीबी खुदा को प्यारी है।

धन विषयक उपरोक्त दोनो विचार परस्पर-विरोधी हैं, इस कारण दोनो सत्य नहीं हो सकते। जो मनुष्य धन ही को सर्वस्व समझते हैं, उन्होने मनुष्य जीवन के उद्देश्यो को नही समझा है। वे केवल विषय वासनाओ की तृप्ति ही को अपने कर्तव्य की इति श्री समझते हैं।

इसी प्रकार धन के निन्दक भी या-तो मूर्ख हैं या मक्कार हैं। बहुत से धन के निन्दक मनुष्य नही समझते कि धन के विना मनुष्य मनुष्य-जाति का इतना उपकार नही कर सकता जितना धन होने पर कर सकता है। ऐसे मनुष्य नहीं समझते कि धन

के बिना बहुत सी शुभेच्छायें मन के भीतर ही मर जाती हैं। और तो क्या, खाने पीने तक के लिए तरसना पड़ता है। पहिनने ओढ़ने के कपड़ों तक के लिए दूसरे का आसरा तकना पड़ता है। इस प्रकार के मनुष्य अधिकतर वे होते हैं जो संसार को दुःखमय समझते हैं तथा इच्छाओं को नष्ट करना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। ऐसे मनुष्यों के लिये तो प्रभु ईशु के शब्दों मे यही कहा जा सकता है:—

Father! Forgive them, for they know not what they do and say.

अर्थात् भगवन्! इनको क्षमा करो क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कहते हैं।

इसके अतिरिक्त धन के निन्दकों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मक्कार हैं। ऐसे लोग जी में तो धन की महत्ता को अनुभव करते हैं, किन्तु निर्धन होने के कारण धन की निन्दा से मन को समझाते रहते हैं अथवा धनोपार्जन में असफल रहने के कारण धन की निन्दा करके 'अगूर खट्टे हैं' की कहावत चरितार्थ करते हैं।

कार्नेगी ने धन के वास्तविक अर्थ समझे थे। वह न तो धन को जीवन का उद्देश्य समझता था, और न धन को बिल्कुल निरर्थक ही बतलाता था। प्रसिद्ध तत्वज्ञानी अरस्तू का कहना है:—

"Virtue is a mean between two Vices."

अर्थात् गुण दो अवगुणों के बीच की स्थिति है।

कार्नेगी का विचार था कि जिस प्रकार वनस्पतियों के लिए जल, वायु आदि आवश्यक हैं, उसी प्रकार मनुष्य के लिए धन आवश्यक है। धन अलाउद्दीन का चिराग़ है जो, चिराग़ के आधीन जिनों के समान, आज्ञा पाने पर प्रत्येक पदार्थ उपस्थित कर सकता है। धन द्वारा मनुष्य-जाति का बड़ा उपकार किया

जा सकता है जैसा कि एक अङ्गरेज़ विद्वान् का भी कथन है:—

The man who has money, has always the power—the divine power a man can possess—of making those about him happy.

अर्थात् जिसके पास धन है उसके पास शक्ति—दैवी शक्ति—है जिसके द्वारा मनुष्य अपने आस पास वालों को सुखी बना सकता है।

किन्तु धन का प्रशंसक होने पर भी कार्नेगी धन ही को सर्वस्व नही समझता था। धन-सञ्चय ही को उसने जीवन का अन्तिम उद्देश्य नहीं समझा था। उसके विचार मे मनुष्य-जीवन का उद्देश्य मनुष्य-जाति का यथाशक्ति उपकार करना था। धन-सञ्चय को वह इस कारण महत्त्व देता था क्योंकि वह समझता था कि धन मनुष्य-जाति की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रधान साधन है। वह अपनी विषय वासनाओं की तृप्ति के लिए धन सञ्चय नहीं करता था। उसका कहना था:—

"धन-सञ्चय करने की इच्छा रक्खो, धन-सञ्चय करने का प्रयत्न करो तथा धन-सञ्चय करके उसे मनुष्य-जाति के उपकार मे लगादो"। कार्नेगी जैसा कहता था वैसा ही करता भी था।

कार्नेगी ने धन की वास्तविकता को बहुत ठीक समझा था। बहुत थोड़े मनुष्य ऐसे हैं जो धन की वास्तविकता को समझते हैं। कार्नेगी के धन-विषयक विचार विशेषतया मनन करने योग्य हैं, क्योंकि आधुनिक काल की अधिकांश समस्याओं की जड़ मे धन ही का प्रश्न है तथा धन की वास्तविकता समझने तथा उसे कार्य रूप में परिणत करने पर ही वे समस्यायें हल की जा सकती हैं।

सारांश यह कि कार्नेगी का जीवन निराश मनुष्यों में नई आशा तथा निरुत्साही मनुष्यों में नूतन उत्साह तथा शक्ति का सञ्चार करके, उनको सफलता-शिखर की ओर ले जाने वाला है। कार्नेगी के जीवन से निर्धन तथा धनवान् दोनों प्रकार के मनुष्य शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

कार्नेगी के विचार बहुत ही सारगर्भित तथा उदार हैं। वे एक मनुष्य-जाति के सच्चे शुभचिन्तक के हार्दिक उद्गार हैं। उसके विचार संसार की बहुत सी विवादग्रस्त आधुनिक समस्याओं पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। उदाहरणतः उसके विचारों को कार्य-रूप में परिणत करने से मालिकों (Capitalists) तथा मजदूरों (Labourers) के झगड़े एक उचित सीमा तक मिट सकते हैं। निर्धन मनुष्यों का दिन प्रति दिन अधिकाधिक बढ़ता हुआ असन्तोष बहुत कुछ कम हो सकता है।

यद्यपि कार्नेगी का नश्वर शरीर अब इस संसार में नहीं है, किन्तु उसकी पवित्र आत्मा उच्च आकांक्षा रखने वाले उद्योगी तथा साहसी मनुष्यों को सफलता-शिखर का मार्ग दिखाने के लिए अदृश्य रूप से वर्तमान है तथा सदैव वर्तमान रहेगी।